

वार्षिक पत्रिका (12वाँ अंक, वर्ष 2022)

प्रयास



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून



प्रयास

वार्षिक पत्रिका
12 वाँ अंक, वर्ष 2022







हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियों !

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई सम्पन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिये अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारम्भ में 14 भाषाएं रखी गयीं थी। और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुये हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आजादी के आन्दोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आन्दोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपी को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिये निर्देश दिये गये हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश अजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी काम काज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितम्बर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा हिंदी के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिये प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किये हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिये गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुये हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय – समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारीशों के दस खण्ड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खण्ड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13,14, नवंबर 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस 2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किये जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिये 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृ भाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृ भाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'वृहद शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ सन्दर्भ के लिये एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिये अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी है, यहीं पुष्पित, पल्लवित हुई है और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं। जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

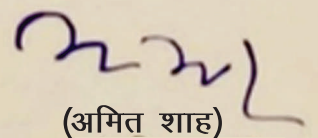
आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितम्बर 2022


(अमित शाह)

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव





कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव।



आजादी के अमृत महोत्सव पर प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वारा दीप प्रज्जवलन।



आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर सम्मिलित अधिकारीगण।



आजादी के अमृत महोत्सव पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



आजादी के अमृत महोत्सव पर सांस्कृतिक कार्यक्रम मंच पर उपस्थित प्रतिभाग करने वाले कर्मचारीगण।



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



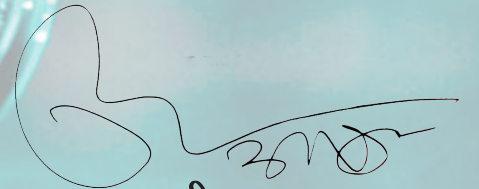
संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यह कार्यालय हिंदी पत्रिका "प्रयास" के बारहवें (12वें) अंक को शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्य एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके सद्प्रयासों से पत्रिका यहां तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके माध्यम से ही विभागीय प्रतिभाएँ सामने आती हैं तथा सकारात्मक वातावरण तैयार होता है। इसके साथ-साथ कार्यालय की प्रत्येक गतिविधि का विवरण भी इन पत्रिकाओं के माध्यम से पूरे देश में प्रेषित हो जाता है। "प्रयास" पत्रिका इन महत्वपूर्ण कार्यों में निर्बाध योगदान कई विगत वर्षों से देती आ रही है।

हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय पहचान भी है। अतः अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके हमें राष्ट्रीय गौरव महसूस होना चाहिए। इन भावनाओं को हृदय में धारण कर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि सभी कार्मिक भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय देते रहेंगे।




प्रवीन्द्र यादव



उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



संदेश

कार्यालयीन वार्षिक पत्रिका 'प्रयास' के प्रकाशन की निरंतरता को बनाये रखते हुए पत्रिका के 12वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य कार्यालय के कार्यों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देना एवं राजभाषा कार्यों को प्रोत्साहित करना है। भारतेन्दु हरीशचन्द्र जी के शब्दों में – "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।" किसी भी राष्ट्र की भाषा केवल मनोभावों को प्रकट नहीं करती अपितु राष्ट्र की संस्कृति एवं सभ्यता की भी गरिमा को दर्शाती है। हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ ही राजभाषा का भी दर्जा प्रदान किया गया है। तदनुसार इस पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य को भी पूर्ण करता है।

राजभाषा पत्रिका 'प्रयास' हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ ही सभी रचनाकारों की रचनात्मकता को भी व्यक्त करती है। कार्यालयीन पत्रिका 'प्रयास' के सफल प्रकाशन पर सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को असीम शुभकामनाएँ।

योगेश अग्रवाल
उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक प्रयास



उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रयास' का 12 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। कार्यालयीन पत्रिका का राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में विशेष योगदान होने के साथ ही राजभाषा के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना है। हिंदी आज देश-विदेश की भाषाओं को आत्मसात् करते हुए अपना प्रमुख स्थान बना चुकी है एवं पत्रिका की रचनाएँ कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देती हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी असीम शुभकामनाएँ।

नेहा मित्तल
उप महालेखाकार ए0एम0जी III



वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून



संपादकीय....

भारत राष्ट्र में राष्ट्रभाषा सदैव ही विचारों को व्यक्त करने का सर्वोत्तम माध्यम है। इसी प्रकार हमारे देश में विविध संस्कृति, विविध खान – पान, विविध वेषभूषा होने के बावजूद हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया है। राष्ट्रभाषा के साथ ही हिंदी को सरकारी कामकाज के लिए राजभाषा का भी दर्जा दिया गया है। पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य हिंदी के प्रचार – प्रसार को बढ़ावा देना तथा सरकारी कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पत्रिका के “बारहवें” अंक को प्रस्तुत करते हुए मैं गौरवान्वित हूँ एवं संपादक मंडल तथा सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

जय मातृभाषा हिंदी, जय हिंद।

डी.पी.लखड़ा

डी.पी.लखड़ा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी
एवं संपादक, “प्रयास”

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री प्रवीन्द्र यादव, प्रधान महालेखाकार
प्रधान संपादक	:	श्री योगेश अग्रवाल, उप महालेखाकार
संपादक	:	श्री डी.पी. लखेड़ा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री विवेक केशला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
परामर्शदाता	:	श्री दिलीप कुमार, सुश्री मिनाक्षी चौरसिया
संपादन सहयोग	:	श्रीमती रेशू चौधरी, श्री प्रवीन कुमार
मुख्य पृष्ठ	:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून
दूसरा अन्तिम पृष्ठ	:	भावपूर्ण श्रद्धांजली
पार्श्व पृष्ठ	:	पर्यटक स्थल टिहरी बाँध का मनोरम दृश्य

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचनार्ये	लेखक	पृष्ठ संख्या
1-	समय प्रबंधन	श्री नेत्रपाल	16
2-	अग्निवीर	श्री अगम सिंह	17
3-	आधुनिक एवं आध्यात्मिक जीवन में योग का महत्व	श्री कुलदीप कुमार	18
4-	प्लास्टिक – पर्यावरण पर संकट	श्री विवेक केशला	19
5-	एक वृक्ष की आत्मकथा	आराध्या मिश्रा सुपुत्री श्री मधुकर मिश्रा	20
6-	नया दौर	श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय	21
7-	नेता मेरे देश के (एक व्यंग्य)	श्रीमती मधुदेवी "मैखली", पत्नी श्री महावीर सिंह	22
8-	पुंगलवा – यात्रा संस्मरण	श्री कमलकान्त पाण्डेय	23
9-	पेड़ की व्यथा	दिव्यांश सुपुत्र श्री मनोज जयसवाल	24
10-	यह मेरा शहर है साहब	श्री चाँदवीर	25
11-	महासमुद्र	श्री निशा पाण्डेय	26
12-	महिला सशक्तिकरण	श्री गोपाल दत्त	27
13-	मानसिक रोग एवं स्वास्थ्य	श्री अशोक कुमार	28
14-	मित्रता	श्री अंकुर	31
15-	लक्ष्य	श्रीमती रेशू चौधरी	32
16-	संगीत, दिलों का उत्सव	श्री नरेन्द्र लाल	33
17-	सफर में हूँ, मुकम्मल सा, कुछ अधूरा सा	श्रीमती उर्मिला लिंगवाल	34
18-	हमारी जिन्दगी की नाव	श्री प्रवीन कुमार	35

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचनाये	लेखक	पृष्ठ संख्या
19-	हास्य बाल कहानी	मा. शिवम मिश्रा / सुपुत्र श्री मधुकर मिश्रा	36
20-	आसमान छूती महँगाई	श्री योगेश त्यागी	37
21-	मातृभाषा (हिन्दी)	श्री महावीर सिंह	38
22-	कवि कवीश	श्री सन्तोष गुप्ता	34
23-	बच्चों के व्यवहार पर माता-पिता का प्रभाव	सुश्री अक्षरमालिका	41
24-	चिड़ियाँ	श्री सुबोध नागर	42
25-	काव्य प्रेम	श्री अरुण कुमार	43
26-	जीवन का टॉनिक दोस्त.....।	श्री दिलीप कुमार	44
27-	सकारात्मक सोच	श्रीमती माया मैठानी, पत्नी श्री प्रवीन कुमार	45
28-	घर से दूर जब रहने लगे	श्रीमती रूचि रानी	46
29-	अटल कवि	श्री मोहित सेठ	47
30-	हमारी प्यारी हिंदी	श्रीमती शोभा सेठ	48



श्री नेत्रपाल
(लेखापरीक्षक)

समय प्रबंधन

समय मूल्यवान सत्ता है। समय का सदुपयोग जीवन की महानतम संभावनाओं को प्रकट करने में समर्थ है। अतः उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्राप्त ऊर्जा, शक्ति, सामर्थ्य और समय का सही उपयोग हो। जीवन का एक-एक क्षण उपयोगी है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे प्रत्येक क्षण का उपयोग करके ही महान बने हैं। समय नष्ट करना जीवन नष्ट करने जैसा है, यह विचारणीय है। समय नष्ट होने का मूल कारण यह है कि हम इसकी उपयोगिता के बारे में जागरूक नहीं हैं। अधिकतर हमारा समय आलस्य, प्रमाद, लापरवाही में जा रहा है। अतः इस बात पर विशेष ध्यान दें कि हमारा जीवन अव्यवस्थित ना हो। किसी भी कार्य के लिए समय निर्धारित करें। प्रकृति का कण-कण हमें समय पालन की सीख देता है। समय चक्र की गति बड़ी अद्भुत है। समय का चक्र निरन्तर गतिशील रहता है, रुकना इसका धर्म नहीं है। विश्व में समय को सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान धन माना गया है। यदि मनुष्य की अन्य धन-संपत्ति नष्ट हो जाए तो सम्भव है वह परिश्रम, प्रयत्न एवं संघर्ष से पुनः प्राप्त की जा सकती है, किन्तु बीता हुआ समय वापस नहीं आता। इसी कारण समय को सर्वाधिक मूल्यवान धन मानकर उसका सदुपयोग करने की बात कही जाती है। समय का सदुपयोग करने का अधिकार सभी को समान रूप से मिला है। किसी का इस पर एकाधिकार नहीं है। जीवन में समय के सदुपयोग के लिए इसके महत्व को समझने के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि हम अपने कार्य की प्राथमिकताओं के आधार पर अपने समय को बुद्धिमत्ता से विभाजित कर लें, ताकि कार्य की महत्ता के अनुसार हम अपने सभी कार्यों को उचित समय दे सकें। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं वे सभी समय का सदुपयोग करने के कारण ही सफलता के उच्चतम शिखर तक पहुँच सके हैं। अतः प्रत्येक कार्य को समय पर सम्पन्न करना ही सफलता का रहस्य है। आज समय गँवाने का अर्थ है कि प्रगति की राह में स्वयं को पीछे ढकेलना। प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण है, क्योंकि जो पल एक बार गुजर जाता है वह कभी भी वापस नहीं लौटता है। सफलता के लिए यदि व्यक्ति समय रहते प्रयास नहीं करता तो वह जीवनपर्यन्त ठोकरे खाता रहता है और उसकी सफलता मृगतृष्णा की भांति उससे मीलों दूर रहती है। जो लोग समय के साथ चलते हैं वे जीवन में अपने पदचिह्न छोड़ जाते हैं और सम्पूर्ण विश्व उनका अनुकरण करता है। लेकिन वे सभी लोग जो समय के महत्व को नहीं समझ सके अथवा समय के साथ न चल सके वे लुप्तप्राय हो गए। अतः यह आवश्यक है कि यदि संसार में हम एक अच्छा और सफल जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हम समय के महत्व को समझें और हर क्षण को उसकी पूर्णता के साथ जिएँ।

प्रकृति स्वयं समयबद्ध है। सूर्योदय और सूर्यास्त तक का समय निश्चित है। ऋतु-चक्र भी निश्चित हैं। उपग्रहों और ग्रहों की चाल और सीमाएँ तय हैं। हमें समय का सम्मान करना चाहिए। जो समय की उपेक्षा करते हैं वे कदापि सफल नहीं हो सकते, समय उन्हें ठुकराकर आगे बढ़ जाता है। जो समय का मूल्य समझकर उसका सम्मान करते हैं, समय उनका मित्र बन जाता है। एक-एक क्षण कीमती है, समय नष्ट करना स्वयं की बर्बादी को न्योता देने के समान है। उन्नति के इच्छुक व्यक्ति कभी अपना समय व्यर्थ नहीं जाने देते, और वह एक-एक क्षण का सदुपयोग करते हैं। व्यर्थ के झगड़ों में कीमती समय नष्ट करने से बढकर और कोई मूर्खता नहीं है, जिनके जीवन में समन्वय होता है, उनका जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत होता है, अतः हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करें। समय को यदि हम और विस्तृत रूप में समझे तो कह सकते हैं कि समय ही विश्व का निर्माता और विनाशक है। यह सदैव गतिमान है विधार्थी जीवन में समय की उपयोगिता तो और भी बढ़ जाती है, क्योंकि यह वह समय है जब मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है। वे सभी छात्र-छात्राएँ जो विधार्थी जीवन में समय के महत्व को समझते हुए इसका पूर्ण रूप से उपयोग करते हैं तथा लगन और परिश्रमपूर्वक शिक्षा ग्रहण करते हैं, वे ही उन्नति को प्राप्त होते हैं। निरन्तर कार्य भी हमें शारिरिक व मानसिक रूप से थका देता है इसलिए आवश्यक है कि उचित अंतराल के बाद हम विश्राम लेते रहें तथा मनोरंजन आदि के लिए भी समय निकाले जिससे हम पुनः स्फूर्तिवान, प्रसन्नचित्त एवं सक्रिय हो सकें। अतः उचित आराम को समय का दुरुपयोग नहीं कहा जा सकता। मानव जीवन में समय का अत्यधिक महत्व है। समय के मूल्य को पहचानना ही समय का सदुपयोग है। समय किसी का दास नहीं है। वह अपनी गति से चलता है। समय ही सबका संचालन करता है। ईश्वर ने जितना समय हमें दिया है उसमें एक क्षण की भी वृद्धि होना असम्भव है। समय का मूल्यांकन करके हम समय का सदुपयोग करें तो सफलता निश्चित रूप से मिल सकती है। जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है, इस बात को अपने हृदय में अंकित कर लें। प्रकृति ने किसी को भी अमीर गरीब नहीं बनाया उसने अपनी बहुमूल्य सम्पदा यानि की चौबीस घंटे सभी को बराबर बांटे हैं। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो, परन्तु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया गया बीज व्यर्थ चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझ कर नष्ट कर रहे हैं वही पल हमारे लिए सौभाग्य व सफलता का क्षण हो। हमें अपना हर कार्य करने के लिए एक सुनिश्चित कार्यक्रम बना लेना चाहिए और फिर उसी के अनुरूप अपने कार्यों को सम्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए।





श्री अगम सिंह
स.ले.प.अ. (तदर्थ)

अग्निवीर

मेरी प्यारी रे दुल्हनियाँ मैं तो बन गया अग्निवीर।
बन गया अग्निवीर रे मैं तो बन गया अग्निवीर॥
मेरे बाँके रे साँवरिया कैसे बन गया अग्निवीर।
बन गया अग्निवीर तू कैसे बन गया अग्निवीर॥
मातृभूमि की रक्षा करना पहला धर्म है सबका।
दूजे सेवा माता-पिता की तीजे भजना रब का॥
रे कब का कहता मैं सजनिया मैं तो बन गया अग्निवीर।
मेरी प्यारी रे दुल्हनिया मैं तो बन गया अग्निवीर॥
मेरे बाँके रे साँवरिया कैसे बन गया अग्निवीर।
मेरी प्यारी रे साँवरियाँ मैं तो बन गया अग्निवीर॥
मैं क्या जानूँ धर्म, कर्म को, मैं क्या जानूँ रब को।
तेरे चरणों की सेवा मिल जाय पा जाऊँ मैं सबको॥
रे ले चल हमको संग में रण को हम भी बन जाये अग्निवीर।
मेरे बाँके रे साँवरियाँ कैसे बन गया अग्निवीर॥
ढँक, तोप, संगीन चले तू डर जाय अबला नारी।
घर पर बैठी मौज करे जा ओ प्रीतम की प्यारी॥
रे सारी कर ले तू मोजनिया मैं तो बन गया अग्निवीर।
मेरी प्यारी रे दुल्हनियाँ मैं तो बन गया अग्निवीर॥
मेरे बाँके रे साँवरियाँ कैसे बन गया अग्निवीर॥
मेरी प्यारी रे दुल्हनियाँ मैं तो बन गया अग्निवीर।
मैं भी तेरे संग चलूँगी कंधे रख संगीन।
तुझ से पहले गोली खाकर करूँ भूमि रंगीन॥
रे मैं भी भारत की सपूतिया बन जाऊँ अग्निवीर।
मेरे बाँके रे साँवरिया कैसे बन गया अग्निवीर॥
मेरी प्यारी रे दुल्हनियाँ मैं तो बन गया अग्निवीर।
मेरे बाँके रे साँवरियाँ कैसे बन गया अग्निवीर॥

भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं
और हिंदी
महानदी।



रवीन्द्रनाथ ठाकुर



श्री कुलदीप कुमार
(लेखापरीक्षक)

आधुनिक एवं आध्यात्मिक जीवन में योग का महत्व

योग मनुष्य जीवन की दिव्यता व पूर्णता के जागरण की विधा है। तन-मन बुद्धि का संतुलन व ईश्वर प्राप्ति योग का फल है। योग स्वास्थ्य जीवन की बहुमूल्य उपलब्धियों में से एक है। संतुलित आहार, अच्छे विचार, एवं नियमित योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक साधन हैं। योग साहस, सुख और आनन्द जैसे महान दिव्य गुणों को जागृत करता है। भारत ने विश्व को योग और आध्यात्म दिया है। विश्व ने योग की महत्ता को समझा और इसे अपनाया। वैदिक काल से ही हमारे ऋषि मुनियों ने योग को गुरुकुल के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया। योग एक साधना है जो मनुष्य को बौद्धिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है। योग करने से गंभीर से गंभीर बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है इसलिए नियमित रूप से योग करना चाहिए। योग को अपनी जीवनशैली का अंग बनाकर न केवल आरोग्यता अपितु इस लोक व परलोक की समस्त अनुकूलताएँ प्राप्त की जा सकती है। योग शरीर और आत्मा का मिलन कराता है। वास्तव में लोग इसे मात्र एक एक्सरसाइज मानते हैं लेकिन यह पूरा एक दर्शनशास्त्र है जो आपको आपसे मिलाता है। योग भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विधा है। योग से हमारा सर्वांगीण शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और व्यावहारिक विकास होता है। योग जीवन जीने की कला है जिसे सीखकर व्यक्ति स्वस्थ रहता है और जीवन में सफल होता है तब हमारा जीवन दिव्य बनता है और हम अपने भाग्य बदलने में सक्षम होते हैं। योग से चरित्र में सुधार, वाणी में मधुरता, कार्य में कुशलता रोगों से मुक्ति, तनाव रहित और प्रसन्नता पूर्ण जीवन जिया जा सकता है। बुरी आदतों को योग के माध्यम से छोड़ा जा सकता है। योग करने से सकारात्मक विचार बनते हैं, जिससे हम निराशा, हताशा, अवसाद से बच सकते हैं और आशा और उत्साहपूर्वक जीवन जी सकते हैं। योग का मतलब शरीर मन और आत्मा को साथ लाना होता है। जब ये तीनों एक साथ होते हैं तब वो योग कहलाता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर तरह के योग को आध्यात्म से जोड़ा जाता है चाहे वो श्रेष्ठ योगासन हो या फिर मन और आत्मा को साथ में लाने के लिए ध्यान योग हो। योग का अर्थ ही होता है जोड़ना। आत्मा का परमात्मा से मिलन ही श्रेष्ठ योग है। योग हमारे ऋषि मुनियों द्वारा दिया गया एक अनमोल उपहार है। यह एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, जो आपके सम्पूर्ण स्वास्थ्य को स्वस्थ बनाने में सहायक है। योग का अभ्यास आपको आध्यात्म से भी जोड़ता है। योग के अंतर्गत कई चीजें हैं, जैसे भक्ति, कर्म, ध्यान आदि। यह आपको ऊर्जा प्रदान करने वाला आनन्दमय उपहार है। योग की विशेषता यह है कि इसे करने के लिए आपको किसी भी साधन की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए इसे हर व्यक्ति कर सकता है चाहे वो गरीब हो या अमीर साथ ही इसे हर उम्र का व्यक्ति कर सकता है। बच्चे हो या बूढ़े हर कोई योग को



करके इससे लाभान्वित हो सकता है। आज के युग में आवश्यकता है कि योग व चरित्र निर्माण के विषय में छोटी उम्र से ही बच्चों को संस्कार दिया जाये तथा विद्यालय पाठ्यक्रम में भी छोटी कक्षाओं से ही योग का अध्यापन होना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सुख-दुःख, लाभ-हानि, शत्रु-मित्र, शीत और उष्ण आदि द्वन्द्वों में सर्वत्र समभाव रहना ही योग है। कर्तव्य, कर्म बन्धक न हो इसलिए निष्काम भावना से अनुप्रेरित होकर कर्तव्य करने का कुशल योग है। अर्थात् सरल भाषा में कहें तो फल की इच्छा के बिना कर्म करना ही योग है। इस भौतिकवादी, क्लेशमय जीवन में योग की सबसे अधिक आवश्यकता है। थोड़ा सा नियमित आसन और प्राणायाम हमें निरोगी तथा स्वस्थ रख सकता है। इन नियमों के पालन से हमारा जीवन अनुशासन से प्रेरित हो, धारणा एवं ध्यान के अभ्यास से वह न केवल तनावरहित होगा, वरन् कार्य कुशलता में पारंगत भी हो पायेगा। योग जीवन में पूर्णता का अनुभव है।

अतः योग से जुड़कर हम अपने उत्थान के साथ-साथ समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में भी सहभागी बनें। जीवन का हर क्षण बहुमूल्य है उसे नष्ट न होने दें। मनुष्य के भीतर एक महान व्यक्तित्व समाहित है। जब भी जिस शुभ कार्य करने की इच्छा जागृत हो उसे तत्काल आरम्भ कर देना चाहिए।

(महर्षि दयानन्द)

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।



श्री विवेक केशला
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

प्लास्टिक – पर्यावरण पर संकट

वर्तमान समय में अपने दैनिक जीवन के लगभग हर क्षेत्र में हम दिन की शुरुआत से लेकर अन्त तक प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग करते हैं। हम हमेशा बढ़ चढ़कर प्लास्टिक का उपयोग करते हैं, ये जानते हुए भी कि प्लास्टिक का उपयोग हमारे जीवन के लिए कितना घातक है। प्लास्टिक नॉन बायोडिग्रेडेबल है। जिसके कारण यह भूमि एवं जल प्रदूषण का प्रमुख कारण बन गया है।

दुनिया के बहुत से देश प्लास्टिक का विकल्प खोजने में प्रयासरत हैं। हमें भी अपने भारत को प्लास्टिक मुक्त भारत बनाना है। इस योजना को सफल बनाने के लिए मिल-जुल कर काम करना होगा। जैसे – प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े या कागज की थैलियों का प्रयोग धातु के कंटेनर आदि का उपयोग करना चाहिए। भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए हमें आज ही शुरुआत करनी होगी। जिससे हम आने वाली पीढ़ी का अच्छा भविष्य निर्माण कर सकें। हमें इस बारे में गंभीरता से सोचना होगा, ताकि हम आने वाली मुसीबत को कम कर सकें और लोगों को जागरूक भी बना सकें। अगर हम समस्या का कारण है तो समाधान भी हमें ही ढूँढ़ना होगा। पर्यावरण संरक्षण हेतु हमें मिलजुल कर अपने देश भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाना होगा। प्लास्टिक बेशक हमारी जीवन में रच – बस चुका हो, लेकिन हमें समझना होगा कि ये हमारे जीवन के लिए बहुत ही खतरनाक है। बस जरूरत है तो सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम उठाने की और हम स्वयं इस बात का निश्चय कर ले कि प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करेंगे तो पर्यावरण और अपने जीवन को होने वाली हानि को रोक पायेंगे।





आराध्या मिश्रा सुपुत्री श्री मधुकर मिश्रा
(सहायक पर्यवेक्षक)

एक वृक्ष की आत्मकथा

वृक्ष हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। वह हमारे सबसे अच्छे मित्र है। उन्हें हमें कभी काटना नहीं चाहिए। आइए, इसे हम इस कहानी के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं। बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव था, जिसका नाम चंपकवन था। उस गाँव के कुछ बच्चे एक बगीचे में खेल रहे थे। तभी उनमें से एक वृक्ष बोला, मैं तुम सबको अपनी आत्मकथा कहना चाहता हूँ। क्या तुम कथा सुनना चाहते हो, बच्चे बोले हाँ। क्यों नहीं? वृक्ष बोला – मैंने इस धरती पर जन्म लिया। मुझे लोग कई नाम से जानते हैं। जैसे – पेड़, पादप, तरु व अन्य कई नामों से भी।

एक समझदार आदमी ने मुझे बोया। उसने मेरी देख – रेख की। उसने मुझे जरूरत पड़ने पर हर वो चीज दी जो हर एक पेड़ को चाहिए होती है। जैसे – हवा, पानी व रोशनी। धीरे – धीरे मैं बढ़ता गया और बगीचे में खेलने वाले बच्चों ने मेरे पत्ते तोड़ने शुरू किये और मुझे पत्थरों से मारना शुरू किया। मैं कुछ ही दिनों में बड़ा हो गया। मेरे दोस्त मनुष्यों को मुझसे काफी चीजे प्राप्त होती हैं। जैसे – छाँव, फूल और फल और इसके बदले में मनुष्य मुझे काटकर, उसी जगह पर कारखाने व इमारतें बनाते हैं। इसके अलावा वे हमारे फलों व लकड़ियों का भी उपयोग करते हैं। मेरी आप लोगों से विनती है कि खूब पेड़ (हमें) लगायें व हमारी रखवाली करें।

हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।
(माखनलाल चतुर्वेदी)





श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

नया दौर

नया दौर है जमाने का, चलन नया हैं।
परिवेश बदल गया, सारा चमन नया हैं।
हर चीज बिकती है, यहाँ खुले बाजार में
हर आदमी लिप्त हुआ है, यहां व्यापार में
आदमी बिकता है और बिकता है उसका ईमान भी
घर बिकता है, जमीन बिकती है और बिकता आसमान भी
एहसास है बिकाऊ यहां, प्यार भी बिकता है
हर चीज बिकती है जो यहाँ दिखावा है।
मगर सबसे ज्यादा बिकते है सम्बन्ध यहाँ पर
मतलब से दोस्ती, मतलब से यार बनते हैं
आपसी सम्बन्धों में ही अब व्यापार बनते हैं
हम हर उस आदमी को जानते, पहचानते हैं
जो कभी काम आये, बस उसे पुचकारते हैं
बाकी छोड़कर सबको हम आगे भाग रहे हैं।
जो काम के नही उनको हम अब त्याग रहे हैं।
अगर हो मतलब तो दुआ सलाम रखते हैं
काम निकल जाये फिर दूर से राम-राम करते हैं।
व्यापार जैसे तय होता है नुकसान और फायदे से
आदमी भी तय हो रहे है, व्यापार के कायदे से
अगर फायदा है किसी को किसी से तो जानते हैं
हर तरह से वो अपने है, अपना हमें मानते हैं
अगर फायदा नही है, तो हम किसी को जानते नही
भैया तुम कौन, कहां से हम तुम्हे पहचानते नहीं !

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक
भाषा है, जिसे बिना
भेद-भाव प्रत्येक भारतीय
ग्रहण कर सकता है।



मदन मोहन मालवीय





श्रीमती मधु देवी,
पत्नी श्री महावीर सिंह (बहुउद्देशीय कर्मी)

नेता मेरे देश के (एक व्यंग)

सुन लो मेरे देशवासियों बात तुम्हें कुछ बतलाऊँ ।
आज मंच पर आ करके मैं नेताओं के गुण गाऊँ ।
जनता के वोटों की ताकत नेता में समाहित है ।
मन मर्जी का राज चलाना नेताओं की आदत है ।
मुंह में राम नाम ये जपते बगल में छुरा दबाते हैं ।
जनता के खजाने को ये अपने लिये लुटाते हैं ।
सुन लो मेरे देशवासियों बात तुम्हें कुछ बतलाऊँ ।
आज मंच पर आ कर के मैं नेताओं के गुण गाऊँ ।
कुछ तो अनपढ़ नेता हैं और कुछ-कुछ दसवीं पास हैं ।
पढ़े-लिखे भाई बंधुओं को इनसे विकास की आस है ।
वाद-विवाद में जब जाते तो, करते ये संग्राम हैं ।
मुद्दे क्या हैं यहाँ चर्चा के उससे ये अंजान हैं ।
सुन लो मेरे देशवासियों बात तुम्हें कुछ बतलाऊँ ।
आज मंच पर आ कर के मैं नेताओं के गुण गाऊँ ।
तेरह का पहाड़ा भी न जाने ऋण धन का भी ज्ञान नहीं ।
शिक्षामंत्री बन बैठें पर शिक्षक की पहचान नहीं ।
पाँच अंगुल ना धरे धरा में मिट्टी की पहचान नहीं ।
कृषि मंत्री बन जाते हैं फसल का कोई ज्ञान नहीं ।
सुन लो मेरे देशवासियों बात तुम्हें कुछ बतलाऊँ ।
आज मंच पर आ कर के मैं नेताओं के गुण गाऊँ ।
भ्रष्टाचारी बेइमानों का जमघट है इनके दल में ।
पढ़े लिखे सब बेच रहे हैं चाय पकोड़े सड़कों में ।
वंदनीय वह देश जहाँ के नेता निज अभिमानी हों ।
भ्रष्टाचार से मुक्त रहें व मानवता के ज्ञानी हों ।
सुन लो मेरे देश वासियों बात तुम्हें कुछ बतलाऊँ ।
आज मंच पर आ कर के मैं नेताओं के गुण गाऊँ ।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत
करते हैं, उसी तरह लिखा
क्रीजिए । भाषा बनावटी
नहीं होनी चाहिए।



महावीर प्रसाद द्विवेदी



श्री कमलकान्त पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)

पुंगलवा – यात्रा संस्मरण

एक—दो एक, एक—दो एक परेड़ थम्। प्रत्येक रविवार की तह पूर्वी कमान के मुख्यालय फ़ोर्ट विलियम में साउथ गेट के सामने अपने कैडेट मित्रों के साथ 'सन्डे परेड़' कर रहा था। परेड़ के अंत में राष्ट्रीय कैडेट कोर के गीत 'हम सब भारतीय हैं ' के पश्चात हमारे बी.एच.एम (बटालियन हवलदार मेजर) सर जिन्हें हम सब सम्मान से डाम्बर उस्ताद बुलाते थे, ने मुझे लाइन तोड़कर एडमिन अफसर के समक्ष उपस्थित होने का आदेश दिया। हमारे यूनिट के एडमिन अफसर मेजर चन्द्रप्रकाश शर्मा थे जो लगभग सात फुट लम्बे और विशालकाय थे। एडमिन अफसर के समक्ष उपस्थित होने की बात सुनकर मुझे भय और आश्चर्य दोनों हुआ और मैंने अपने यूनीफार्म पर नजर घुमायी क्योंकि प्रत्येक रविवार को अच्छे ढंग से यूनीफार्म न पहने और बूट पॉलिस न होने पर अनुशासनात्मक दण्ड के रूप में फ्रॉग जम्प, फ्रन्ट रोल जैसी सजा दी जाती थी, जो मेरे मित्रों को सत्यनारायण के प्रसाद के रूप में अक्सर प्राप्त होते थे। मैं मार्च करते हुए 2nd बंगाल बटालियन राष्ट्रीय कैडेट कोर के ऊपरी मंजिल पर एडमिन अधिकारी के कमरे में सैल्यूट करते हुए प्रविष्ट हुआ। मेजर सर ने मुझसे पूछा कि किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में कभी प्रतिभाग किया है? मैंने स्कूल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' का हवाला दिया। इसके पश्चात सैल्यूट करते हुए मैं वहाँ से बाहर निकला, नीचे आने पर हमारे यूनिट के सूबेदार मेजर 'श्री कुलदीप थापा' ने हमें यह सूचना दी कि हमारे यूनिट से तीन कैडेट श्री प्रदीप चक्रवर्ती, श्री मलय मल्लिक और मुझे 'राष्ट्रीय एकता कैम्प नागालैण्ड' के लिये चयनित किया गया है और इनमें से मुझे 'सीनियर अण्डर अफसर' का रैंक प्रदान किया गया। मन में तरह—तरह के विचार और कल्पनाओं के बादल उमड़—उमड़ कर घूम रहे थे। मैं शाकाहारी था और मेरे बंगाली मित्र मुझसे तिलचट्टे का आचार और छिपकली, चीटियों की चटनी नागालैण्ड में खाने को मिलेगी यह कहकर हँसी कर रहे थे। कार्यक्रम के अनुसार हमारी बटालियन हवलदार मेजर डाम्बर गुरुंग हमें पहुँचाने हावड़ा रेलवे स्टेशन पहुँचे वहाँ हमारा परिचय पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम निदेशालय के अन्य कैडेट मित्रों से हुआ। नियमित समय पर ट्रेन चल पड़ी। मैं और मेरे मित्र प्रदीप चक्रवर्ती और मलय मलिक ने हमारे उस्ताद डाम्बर गुरुंग को हाथ हिलाते हुए अलविदा किया। यात्रा के दौरान मन अनेक विचारों और जिज्ञासा से परिपूर्ण था। ट्रेन के खिड़की से बाहर भारत के उत्तर—पूर्वी क्षेत्र के पहाड़, नदियों, घने जंगलो के अद्वितीय दर्शन हो रहे थे। मेरे मित्र प्रदीप ने ट्रेन की खिड़की से दूर एक मंदिर की ओर इशारा किया जो प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर था। दिमापुर से कोहिमा, कोहिमा से पुंगलवा। हमारा पड़ाव पुंगलवा के सैनिक स्कूल में था। नागालैण्ड की प्रकृति अद्वितीय वनस्पति से परिपूर्ण थी। ऊँचे झरनों से बहता अमृततुल्य मीठा पानी पीना जिसे जितना पिया जाये उतना ही कम है। पैरों से पहाड़ पर छुई—मुई पौधे के स्पर्श होते ही मुरझा जाना चेहरे पर मुस्कान छोड़ जाती मानों पौधों को शर्म आ रही हो।

पुंगलवा पहुँचने पर वहाँ अन्य निदेशालय के कैडेटों से मित्रता हुई। विशेषतः मैंने दक्षिण—भारत के मित्रों से मलयालम, तमिल के शब्दों को सीखने का प्रयास किया। पुंगलवा की यात्रा रोमांच से परिपूर्ण थी घुड़सवारी, पर्वतारोहण रस्सी से ऊँचाई पर चढ़ना आदि शामिल थे। नागालैण्ड में हमने द्वितीय विश्वयुद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में कोहिमा युद्ध स्मारक, नागा हेरिटेज विलेज एवं नागालैण्ड के प्रसिद्ध गिरिजाघर का भ्रमण किया। कैम्प के दौरान हमने अनेक प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया। कैम्प के सांस्कृतिक कार्यक्रम के समापन समारोह में नागालैण्ड के माननीय राज्यपाल से सभी कैडेटों को संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय कैडेट कोर के अन्य निदेशालय के मित्रों से पुनः मिलने का वादा करते हुए मैं और मेरे मित्र कोहिमा से हावड़ा के लिए ब्रह्मपुत्र एक्सप्रेस में सवार हुए। मन में पुंगलवा की यादों को बसाए एवं वहाँ बिताये पलों की इतने वर्षों के पश्चात स्मरण करते हुए एक स्वप्न सा प्रतीत होता है जो सदैव चिरस्मरणीय रहेगा।

हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।
(सुमित्रानंदन पंत)





दिव्यांश सुपुत्र श्री मनोज जायसवाल
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

पेड़ की व्यथा

मैं हूँ पेड़ मुझे मत काटो
टुकड़े-टुकड़े में मत बाँटो
दर्द मुझे भी होता है
मन मेरा भी रोता है।
मैं हूँ मित्र तुम्हारा
सखा हूँ सबसे प्यारा
मेरे फल खुद नहीं खाता हूँ
सब तुम्हें ही दे जाता हूँ।
जहरीली हवा भी पी जाता हूँ
सूरज का भी ताप सहूँ
ठंडी-ठंडी हवा भी दूँ।
मैं हूँ जीवन का आधार
फिर भी तुम मुझ पर करते प्रहार
सुनो बात तुम कान लगाकर
सदा करना वृक्षों का सम्मान।
मैं हूँ जीवन का आधार
मैं हूँ जीवन का आधार।

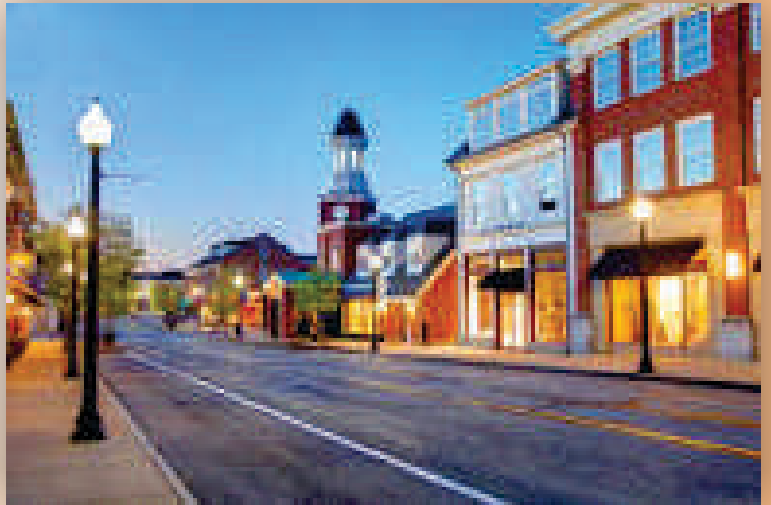




श्री चाँदवीर
(लेखापरीक्षक)

यह मेरा शहर है साहब

बाहें फैलाये प्रतीक्षारत
मेरे व्यक्तित्व को अपने साथ एकाकार कर
मेरे रीतेपन के साथ जागते
मेरे सुख-दुख को समेटे
अविचल खड़ा रहता है
यह मेरा शहर है साहब
मैं यहाँ नहीं बसता
यह मेरे अन्दर बसता है
इसकी गलियों की गोद में
होता है मुझे मेरे होने का बोध
जुड़ा है मेरा अस्तित्व यहीं
यहीं रह कर जाना है प्रेम का मर्म
दिखाया है इसने ही इश्क के रंग
हर पल, हर क्षण
साया बन मेरे साथ रहता है
यह मेरा शहर है साहब
मैं यहाँ नहीं बसता
यह मेरे अंदर बसता है
समाये अपने अंदर, रिश्तों की गंध
यारों की चुहल और अपनापन
मेरी खूबसूरत यादों को
अपने आप में संजोये
मुझे अपनी आबो – हवा में बसाये
मेरी अनमोल स्मृतियों को सुरक्षित रखता है
यह मेरा शहर है साहब
मैं यहाँ नहीं बसता
यह मेरे अंदर बसता है.....



भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है।
(लोकमान्य तिलक)



श्रीमती निशा पाण्डेय
(लेखापरीक्षक)

महासमुद्र

मेरा महासमुद्र कहाँ?
जीवन का तत्व कहाँ?
मिलन कहाँ?
यात्रा कहाँ, पड़ाव कहाँ?
मेरा महासमुद्र कहाँ?
मैं जीवन की नदी, कहाँ बहना
कहाँ बहना
भयभीत खुद, सूख कर अस्तित्व
का मिटना कहाँ
मेरा महासमुद्र कहाँ
सागर से मिलना कहाँ
नदियों से जुलना कहाँ
बिछुड़ना कहाँ
मेरा महासमुद्र कहाँ
जीवन का बहना
युद्ध, क्रूद्ध, विरुद्ध कहाँ
मेरा महासमुद्र कहाँ?
मैं द्रवित मात्र
मेरा मिलन
पूर्व कहाँ, पश्चिम कहाँ
मेरा बहना, किस ओर
मेरा छोर
जीवन की दिशा—डोर
किस ओर
मेरा महासमुद्र कहाँ
मैं मुक्त कहाँ
मैं बुद्ध कहाँ
युद्ध, क्रुद्ध से विमुख शुद्ध कहाँ
मेरा महासमुद्र कहाँ?



राष्ट्रभाषा के बिना एक राष्ट्र गूँगा है।
(महात्मा गाँधी)



श्री गोपाल दत्त
(बहुउद्देशीय कर्मी)

महिला सशक्तिकरण

यह महिला सशक्तिकरण का दौर है, यह नारी सम्मान का दौर है। वैसे भी कहा गया है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जिस कुल में नारियों का सत्कार, सम्मान होता है वहाँ ईश्वर का वास होता है। पिछले दशक पर नजर डालें तो यह दशक निश्चित तौर पर महिला सशक्तिकरण का रहा है। इसमें हमने प्रथम महिला राष्ट्रपति, महिला लोकसभा स्पीकर, महिला राज्यपाल व अनेक गरिमामयी पदों पर हमने अपनी माताओं व बहनों को देखा है। यह एक छोटा सा उदाहरण है लिस्ट बहुत लंबी है।

खेल का मैदान हो, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा हो, निशानेबाजी हों, ओलंपिक में मेडल लाना हो, एवरेस्ट पर तिरंगा लहराना हो, सशस्त्र बलों का नेतृत्व हो, लड़ाकू विमान उड़ाना हो या फिर ऐतिहासिक राजपथ पर परेड का नेतृत्व हो, हर क्षेत्र में हमारी बहन-बेटियों ने हमको गौरवान्वित किया है। अब प्रश्न यह है कि क्या हमारी सभी बहन-बेटियाँ स्वावलम्बी एवं आत्मसम्मान का जीवन जी रही हैं, क्या हमारे सभी बच्चे अच्छी शिक्षा ले पा रहे हैं। क्या सभी को भर पेट भोजन मिल पा रहा है, क्या हमारी बहन-बेटियाँ अत्याचार मुक्त हैं, इन प्रश्नों का उत्तर हमें कहीं न कहीं समाचार पत्रों, सोशल मीडिया से मिल जाता है ये हमारे समाज के दर्पण का कार्य करते हैं। अभी हमें महिला सशक्तिकरण के लिए काफी कुछ करना है। लोगों को जागरूक करना है।

इसका पहला उपचार है शिक्षा। इसकी नींव है शिक्षा। शिक्षित व्यक्ति स्वावलम्बी जीवन जीना सीखता है, अच्छे और बुरे का भेद कर सकता है इसलिए महिला शिक्षा को और अधिक मजबूत करने की जरूरत है। निश्चय ही वर्तमान दौर महिला सशक्तिकरण का दौर है। महिला सम्मान का दौर है। बड़े ही हर्ष का विषय है कि पिछले माह संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्तर की परीक्षा में पहले तीन स्थान पर हमारी बेटियाँ रही। यह गौरवान्वित पल था यही बहन-बेटियाँ कल समाज सेवक के रूप में सेवा देती हैं।

सबसे गौरवान्वित पल यह था जब देश के राष्ट्रपति पद के लिए आदिवासी महिला को राष्ट्रपति चुना जाना। यह संदेश पूरे विश्व में सम्मान के साथ देखा गया। यह लोकतंत्र के लिए गौरव का दिन था। महिला सशक्तिकरण का मजबूत उदाहरण था। नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्रीमती दौपदी मूर्मु का संबोधन गरीबों के लिए आशा की किरण थी। आज हमारी बेटियाँ राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन.डी.ए.) के जरिये कमीशन ले रही हैं, अर्द्धसैनिक बलों का हिस्सा है। राजपथ पर सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करना हो या फिर आसमान में लड़ाकू विमान उड़ाना हो या राजपथ पर परेड की अगुवाई हो, किसी भी क्षेत्र में हमारी बहन-बेटियाँ कम नहीं हैं। ऐसे सैकड़ो उदाहरण हमारे सामने हैं जिनमें महिलाओं ने अपनी क्षमता का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

पिछले सप्ताह ही हाइस्कूल व इंटरमीडिएट की परीक्षाओं में हमारी बेटियों ने फिर अपनी काबिलियत को सिद्ध किया। लोक सभा स्पीकर, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल एवं राष्ट्रपति जैसे गरिमामयी पदों को हमारे देश की महिलाओं ने सुशोभित किया है। आज हम निःसंकोच कह सकते हैं कि ये दौर, ये समय महिला सशक्तिकरण का है।

पिछले दिनों भारतीय नौ सेना ने अग्निवीर स्कीम के तहत महिलाओं के लिए 20 प्रतिशत सीटें आरक्षित कीं। यह महिला सशक्तिकरण का उत्तम उदाहरण है। यह महिलाओं के प्रति सम्मान है। अगर हमारी बहन-बेटियाँ आर्थिक तौर पर स्वावलम्बी बनेंगी तो देश मजबूत बनेगा।

"जय हिन्द, जय भारत"

हिंदी विश्व की महान भाषा है।
(राहुल सांकृत्यायन)





श्री अशोक कुमार
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

मानसिक रोग एवं स्वास्थ्य

ब्रह्मबिन्दूपनिषद् में कहा गया है 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः' अर्थात् मन ही सभी मनुष्यों के बन्धन एवं मोक्ष का प्रमुख कारण है। मन यदि स्वस्थ है तो मनुष्य न केवल अपने समाज बल्कि सम्पूर्ण प्राणी जगत का भला कर सकता है। जब यही मन बीमार हो जाता है तो व्यक्ति स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार और समाज के लिए घातक भी बन सकता है।

प्रतिवर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका में हर पाँच में से एक व्यक्ति किसी न किसी तरह की मानसिक व्याधियों से ग्रसित मिलता है। वहीं भारत में हर सात में से एक व्यक्ति मानसिक रोगों और मनोविकारों से ग्रसित है। विश्व बैंक के एक ब्लॉग के अनुसार पूरे विश्व की सात अरब जनसंख्या में से एक अरब लोग किसी न किसी तरह की मानसिक व्याधि से पीड़ित हैं तथा कम आय वाले देशों में 75 प्रतिशत मरीजों को कभी इलाज नहीं मिल पाता है। भारत के मामले में मानसिक रोगों से ग्रसित लोगों की संख्या और भी ज्यादा हो सकती है क्योंकि यहाँ मानसिक रोगों और मनोविकारों को संस्कारों की कमी, व्यक्तित्व की खामी या भूतप्रेत अथवा किसी दैवीय प्रकोप का नतीजा समझा जाता है। भारत में इन रोगों के प्रति जागरूकता का घोर अभाव है जो समस्या को जटिल बना देता है।

मानसिक रोग वे रोग होते हैं जो व्यक्ति के विचार, संवेगों, भावनाओं और व्यवहार पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। ये व्यक्ति के कामकाज, जीवनचर्या और व्यक्तिगत तथा सामाजिक-पारिवारिक रिश्तों पर दुष्प्रभाव डालते हैं। हमारे देश में मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता की कमी और भ्रम की स्थिति रहती है। अक्सर मानसिक रोगों के पैदा होने के पीछे भूतप्रेत, देवी – देवताओं के प्रकोप या ऊपरी साये को कारण समझा जाता है। ज्यादातर लोग मानसिक रोग को केवल पागलपन (**schizophrenia**) के रूप में समझते हैं जबकि यह अनगिनत मानसिक रोगों में से एक रोग की चरम स्थिति है। मानसिक रोग अधिकतर छुपे होते हैं क्योंकि न रोगी के परिजनों में जागरूकता होती है और न ही रोगी कभी ये स्वीकार करता है कि वह किसी मानसिक रोग से ग्रस्त है। इसलिए ये समय के साथ जटिल और असाध्य होते चले जाते हैं जबकि सभी मानसिक रोग असाध्य नहीं हैं और सभी प्रकार के मानसिक रोग और मानसिक विकार (**schizophrenia**) (स्किटज़ोफ्रेनिया) नहीं होते हैं।

एक 40 वर्ष की महिला को साफ सफाई की सनक है। यदि किसी ने उसकी वस्तु को छू लिया या उसने किसी की वस्तु को छू लिया तो वह बार-बार हाथ धोती है। एक 30 वर्ष का अकेला पुरुष आमतौर पर बीमार नहीं लगता। पर उसकी एक आदत है कि जब घर से निकलता है तो बार-बार लौट कर यह देखता है कि कहीं वह घर के दरवाजे पर ताला लगाना तो नहीं भूल गया। मिस्टर पॉल जो कि 60 वर्ष के वृद्ध पुरुष हैं, कभी-कभी बहुत जोश में आ जाते हैं। ऐसे समय उनका व्यवहार बहुत आक्रामक होता है और वे अपनी बात को काटना पसंद नहीं करते हैं। ऐसे समय उनके अंदर एक विशेष कर्मठता और ऊर्जा का भाव आ जाता है। साथ ही उनको लगता है कि दूसरे निकम्मे और बेकार हैं। इसके विपरीत कभी-कभी वे उदासी की अवस्था में पहुँच जाते हैं। उनको कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। तनाव उनपर हावी हो जाता है। उपरोक्त दोनों स्त्री और पुरुष एक विशेष प्रकार के मनोविकार **obsessive compulsive disorder** से ग्रसित हैं। मिस्टर पॉल को लोग एक मूड़ी और तुनक-मिजाज समझते हैं जबकि वे बाइपोलर डिऑर्डर (उन्माद-अवसादी रोग) से ग्रसित हो सकते हैं। एक सोलह साल की लड़की दौरा पड़ने पर वह अपने को देवी का रूप बताती है और चीखती-चिल्लाती है। उसके गरीब माता-पिता और रिश्तेदार उसे देवी का रूप समझकर उसके आगे हाथ जोड़े खड़े हो जाते हैं जबकि वह हिस्टीरिया से ग्रसित है जोकि मनोभावों के दमन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। मनोविकारों के कई रूप होते हैं जिन्हें मोटे तौर पर निम्नलिखित प्रकारों में बांटा जा सकता है: **Anxiety Disorder** (दुर्श्चिन्ता मनोविकार): जब व्यक्ति की दुष्चिन्ताएँ, डर, घृणा आदि भावनाएँ उस पर हावी होकर उसके जीवनचर्या और व्यवहार को प्रभावित करने लगते हैं तो यह स्थिति दुर्श्चिन्ता मनोविकार बन जाती है। इस वर्ग के मनोविकारों के अंतर्गत तरह-तरह के फोबिया, सामान्य दुर्श्चिन्ता मनोविकार, **Obsessive-compulsive disorder**, पैनिक मनोविकार आदि आते हैं।

फोबिया इस तरह के डर होते हैं जो व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को घेर लेते हैं। अक्सर फोबिया किसी वस्तु, स्थान या घटना के प्रति विकसित होता है। इसके कई उदाहरण हैं जैसे अगोराफोबिया से ग्रस्त मरीज किसी खुली जगह, पार्क, शॉपिंग माल, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों में जाने पर अत्यधिक डरने लगता है। वह इन स्थानों पर खुद को असुरक्षित पाता है। इसके विपरीत **Claustrophobia** का मरीज किसी बंद स्थान में रहने पर भयंकर रूप से भयग्रस्त हो सकता है। कई फोबिया तो बड़े विचित्र होते हैं जिनमें व्यक्ति ऐसी चीजों के प्रति भय से भर जाता है जो सामान्य आदमी के लिए मामूली चीजें होती हैं। **Xenophobia** – अजनबियों के प्रति भय, **Chemophobia** – रसायन शास्त्र के प्रति भय, **rachnophobia** – मकड़ियों से डर, **entomophobia** – कीटों से डर, **aquaphobia** – पानी से भय, **crophobia** ऊंचाई से डर, **nyctophobia** – अंधकार से भय, **trypanophobia** – सुइयों और इन्जेक्शन से डर आदि कुछ विशिष्ट प्रकार के फोबिया के उदाहरण हैं।

सामान्य दुर्बलता मनोविकार से ग्रसित व्यक्ति रोजमर्रा की सामान्य चीजों जैसे परिवार, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, व्यापार, नौकरी, कामकाज आदि के प्रति अतार्किक रूप से अत्यधिक चिंतातुरता से भर जाता है। सामान्य रूप से व्यक्ति अपने परिवार, समाज, जीवन यापन के साधनों के प्रति सोचता है पर इस मनोविकार से ग्रसित व्यक्ति इतनी अधिक चिंता करता है कि उसका सामान्य जीवन भी दुष्कर हो जाता है। वह चिंता के मारे पसीने से भीग जाता है, उसे नींद नहीं आती, चिड़चिड़ा हो जाता है और अंततः चिंता के मारे वह पूरी तरह टूट जाता है।

Obsessive-compulsive disorder में व्यक्ति न चाहते हुए भी कई काम बार-बार करता है। यहाँ तक कि उसकी इस आदत को बाकी लोग भी गलत समझने लगते हैं। जैसे किसी-किसी को बार-बार हाथ धोने की आदत पड़ जाती है, भले ही उसके हाथ पूरी तरह साफ हों। दरवाजे पर ताला लगाने के बाद भी फिर से वापस जाकर देखेगा कि ताला लगा है कि नहीं। कुछ अपने नाखून बार-बार चबाते रहते हैं, कुछ अपनी त्वचा को चबाते रहते हैं तो कुछ किसी स्विच जैसे पंखे के स्विच को बार-बार ऑन-ऑफ करते रहते हैं। कुछ जानते हैं कि उनकी आदत खराब है पर अपनी मनोदशा के आगे विवश हो बार-बार वही काम करते हैं जिनको उनका दिमाग भी गलत मानता है।

Mood disorder (मनोदशा मनोविकार): इसके अंतर्गत मेनिया, हाइपोमेनिया, बाइपोलर डिऑर्डर, डिप्रेशन या तनाव आदि मनोविकार आते हैं। डिप्रेशन या अवसाद आज के जीवन का एक प्रमुख भाग बन गया है। विशेषकर कोविड-19 के आक्रमण के बाद दुनिया भर में तनाव और अवसाद से ग्रस्त लोगों की संख्या बहुत बढ़ गई है। ऐसे व्यक्ति को अपना भविष्य अंधकारमय दिखता है। उसे किसी तरह का उत्साह नहीं होता। जीने की इच्छा समाप्त हो जाती है और हर समय मन में नकारात्मक विचार ही आते हैं। वह दुनिया और समाज से कट जाता है और अपना ही एक घेरा सा बना लेता है जिसमें दूसरे की उपस्थिति भी उसे बर्दाश्त नहीं होती। क्लिनिकल डिप्रेशन की स्थिति में व्यक्ति आत्महत्या जैसा अतिवादी कदम भी उठा सकता है। इसलिए इस तरह के मरीजों की पहचान और उनको सही इलाज की सख्त जरूरत रहती है।

मेनिया जिसे हिन्दी में पागलपन या सनक भी कह सकते हैं, को स्थिति की तीव्रता के अनुसार तीन चरणों हाइपोमेनिया (प्रथम चरण), अक्यूट मेनिया (द्वितीय चरण) और डिलीरीअम (सन्निपात या तीव्र प्रलाप- तृतीय चरण) में बांटा जाता है। कई मेनिया से ग्रस्त व्यक्ति विलक्षण रचनाकार भी हो सकते हैं। ऐसे लोग दुनिया को कोई विलक्षण आविष्कार या कलाकृति देकर अपनी प्रतिभा को प्रमाणित भी कर देते हैं। मेनिया से ग्रसित व्यक्ति बेहद बातूनी, स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझने का भ्रम रखने वाला, स्वयं को बेहद प्रतिभावान, चतुर और विद्वान समझने वाला, किसी वस्तु या विचार के प्रति अत्यधिक आसक्त, तरह-तरह के विचारों से ग्रस्त, सनकी व्यवहार वाला, आवेगी और अति उत्साही हो सकता है। रोग की तीव्र अवस्था और भी गंभीर रोगों में बदल सकती है।

बाइपोलर डिऑर्डर से ग्रसित व्यक्ति के व्यवहार के दो पहलू होते हैं। किसी समय उसका व्यवहार एक मेनिया की तरह हो सकता है जिसमें वह अति आवेगी, प्रलापी, बातूनी, ऊर्जा और उत्साह से भरा, चिड़चिड़ा, जिद्दी और आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करता है और किसी समय अत्यधिक अवसाद से ग्रसित रहता है। उसका मेनिया मूड एक सप्ताह तक भी रह सकता है और हाइपोमेनिया कुछ दिनों तक। इसके बाद अवसाद की स्थिति दो सप्ताह तक रह सकती है जिसमें निराशा, स्वयं के प्रति तिरस्कार का भाव, आत्महीनता, निद्रा में परेशानी, भावुकता जैसे लक्षण रहते हैं। ऐसा व्यक्ति काम में मन नहीं लगा पाता है। बाइपोलर मनोविकार में दोनों तरह के लक्षण एक साथ भी रह सकते हैं।

साइकोसिस (**Psychosis**) विभिन्न मनोरोगों और मनोविकारों के साथ जुड़ा रहता है। इसका मरीज सही और गलत में पहचान नहीं कर पाता है। उसकी सोच भ्रमपूर्ण होती है और उसके विचारों में तारतम्य का अभाव रहता है। उसे कई प्रकार के झूठे भ्रम होते हैं और वह कई ऐसी चीजों को देखने, सुनने या सूंघने का दावा करता है जो बाकी लोगों के लिए अस्तित्व नहीं रखती। उसके मनोभाव बदलते रहते हैं। कभी ठीक रहेगा तो किसी क्षण आक्रामक या द्वेषी हो जाएगा। इस तरह के लक्षण अधिकांश मनोविकारों के साथ संबद्ध होते हैं और व्यक्ति के व्यक्तित्व को नष्ट कर देते हैं।

व्यक्तित्व मनोविकार (पर्सनैलिटी डिऑर्डर): इसे मानसिक विकारों के ऐसे वर्ग के रूप में समझा जाता है जो व्यक्ति के व्यवहार, अनुभूति और आंतरिक अनुभव के ऐसे पैटर्न को व्यक्त करता है जो दुर्भावनापूर्ण होने के साथ-साथ व्यक्ति के समाज और संस्कृति द्वारा स्वीकृत पैमाने से अलग होता है। व्यक्तित्व एक ऐसी सुनिश्चित व्यवहार तथा मानसिक प्रवृत्तियों का समूह है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से अलग करती है। व्यक्तित्व में ऐसा कोई परिवर्तन हो जाना जो सामान्य व्यवहार और प्रवृत्तियों से अलग हो, मानसिक रोग का परिचायक हो सकता है। व्यक्तित्व मनोविकारों के अंतर्गत पैरनॉइड, समाजद्रोही, **avoidant, borderline, histrionic, narcissistic, schizoid** आदि प्रकार के व्यक्तित्व मनोविकारों को रखा गया है।

परनॉइड से ग्रसित व्यक्ति किसी पर विश्वास नहीं कर पाता है। वह अपने मित्र, पड़ोसी, माता-पिता, जीवनसाथी किसी पर भी विश्वास नहीं कर पाता है। वह सभी को अपना दुश्मन समझता है और उसे शक होता है कि सभी उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं। **Schizoid** आत्मकेंद्रित रहते हैं। समाज में घुलना मिलना इनके लिए संभव नहीं होता है। नारसिस्ट आत्ममुग्ध होता है और स्वयं के अलावा किसी और के बारे में नहीं सोच पाता है। **histrionic** लोगों के आकर्षण का केंद्र बने रहना चाहता है। लोगों के आकर्षण का केंद्र बने रहने के लिए वह उलजूल हरकत करने से भी नहीं चूकता। बॉर्डलाइन व्यक्तित्व मनोविकार का मरीज भावनात्मक रूप से कमजोर, आवेगी और अस्थिर चित्त होता है। एंटी सोशल पर्सनैलिटी नियम कानूनों को नहीं मानता और दूसरों के अधिकार और भावना का सम्मान नहीं करता है। सडिस्टिक व्यक्ति को दूसरों को सताने, उनके साथ दुर्व्यवहार करने में आनंद आता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक जिदी, हठी, तुरंत क्रोधित हो जाने वाला, दूसरों को अपने से हीन स्थिति में देखकर आनंद लेने वाला होता है। इस तरह के असामान्य व्यवहार गंभीर मनोविकारों की ओर इशारा करते हैं।

खानपान संबंधी मनोविकार: खानपान के संबंध में अत्यधिक सनक इस श्रेणी के रोगियों में पाई जाती है। **anorexia nervosa** का मरीज हमेशा इस डर के साथे में जीता है कि कहीं वह ज्यादा खाकर मोटा न हो जाए या उसका वजन न बढ़ जाए। कई बार तो ऐसे मरीज अत्यधिक कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। इसके उलट **Bulimia Nervosa** के मरीज बहुत खाना खा लेते हैं और फिर वजन न बढ़े इस डर से खाने को उल्टी कर देते हैं या दस्तावर दवाईयें लेते हैं अथवा खूब कसरत करते हैं ताकि अत्यधिक भोजन के प्रभाव को कम किया जा सके। **Binge Eating Disorder** का मरीज कम समय में ही बहुत ज्यादा खा लेता है। उसको अपने खानपान पर नियंत्रण नहीं होता है।

उपरोक्त मनोविकारों के अतिरिक्त कलेप्टोमेनिया (चोरी करने की अदम्य इच्छा), पायरोमेनिया (आग लगाने की इच्छा), नारकोलेप्सी (अत्यधिक नींद आना), इनसोमनिया (नींद न आना), कामोन्माद आदि मनोविकारों के साथ शराब, अफीम, भांग जैसे नशीले पदार्थों के प्रति अत्यधिक आसक्ति भी मनोविकारों की श्रेणी में आती है। **Schizophrenia** ऐसा मनोविकार है जिसे उपचार करने में सबसे कठिन माना जाता है। इस मनोविकार से ग्रसित व्यक्ति भयानक भ्रम से ग्रसित हो जाता है। वह आभासी चीजों को देखने, सुनने और महसूस करने लगता है। यह मनोभ्रंश की चरम स्थिति है जिसमें व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है। अक्सर ऐसे रोगियों को जीवनभर पागलखाने में रहना पड़ता है।

किसी व्यक्ति में एक साथ एक से अधिक प्रकार के मनोविकार एक साथ रह सकते हैं। भय, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, लालच आदि मानव की सहज भावनाएँ हैं। परंतु जब यह भावनाएँ अत्यधिक बढ़ जाती हैं और व्यक्ति के जीवन और रिश्तों को प्रभावित करने लग जाती हैं तो यही मनोविकार बन जाता है। कर्मठता एक आवश्यक गुण है। परंतु जब कोई व्यक्ति अपने कामकाज और व्यापार के पीछे पागल हो जाता है, अपना खाना-पीना, सुख-चैन सब भूल जाता है तो यह भी मनोविकार बन जाता है। कोई भी चीज जो जरूरत से ज्यादा हो वह मनोविकृति को जन्म दे सकती है। इसलिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। जीवन में अभाव, अत्यधिक दुख या आसक्ति, सही परवरिश न होना, चोट या शारीरिक क्षति, रसायनों का प्रभाव, सामाजिक वातावरण और रीति-रिवाज, आनुवंशिक कारण, मस्तिष्क के रसायनों में गड़बड़ आदि मानसिक रोगों को जन्म देते हैं। मानसिक रोगों का इलाज हो सकता है यदि उनका समय पर पता चल जाए। इसके लिए जरूरी है कि अपने आसपास के व्यक्ति के व्यक्तित्व में हो रहे बदलावों, उसके व्यवहार, रहन-सहन में आए परिवर्तनों को बारीकी से देखा जाए। यदि कोई असामान्य बात लगती है तो उसके परिजनो को उसे किसी मनोविकित्सक के पास ले जाना चाहिए ताकि समस्या का पता चल सके और उसे दूर करने के उपाय खोजे जा सकें। मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता इनके इलाज और रोकथाम के लिए आवश्यक है। प्रतिवर्ष **10** अक्टूबर को मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इसके बाद भी इनके प्रति जागरूकता का अभाव है। इसके प्रति जागरूकता फैलाने के लिए सरकार और समाज दोनों को प्रयास करने होंगे।

मैं मानती हूँ कि हिन्दी प्रचार से राष्ट्र का ऐक्य जितना बढ़ सकता है वैसा बहुत कम चीजों से बढ़ सकेगा।
(लीलावती मुंशी)





श्री अंकुर
(कल्याण सहायक)

मित्रता

कठिन परिस्थितियों में जो साथ निभाता है, वही सच्चा मित्र है। सुख में तो सभी साथ रहते हैं किंतु दुख आने पर सभी साथ छोड़ देते हैं। सच्चे दोस्त की परीक्षा विपत्ति आने पर ही होती है। विपत्ति आने पर जो आपका साथ दे, वही परम मित्र है।

सच्चा मित्र कौन है, जो सगे संबंधी रुपी संपत्ति कई प्रकार की रीति – रिवाज से बनते हैं। पर जो व्यक्ति आपके मुश्किल के समय में आपकी मदद करता है या आपको मुसीबत से बचाता है, वही आपका सच्चा मित्र होता है।

एक अच्छे मित्र की विशेषतायें—

1. आपकी गलतियों को बताए
2. दूसरों के साथ आपके अवगुण न दिखाए
3. सभी के सामने आपके गुणों की तारीफ करें।
4. मुश्किल समय में धन देकर सहायता करे।
5. अच्छे कामों के लिये आपको प्रेरित करें।
6. बुरे समय में आपका साथ न छोड़े।

मित्र ही संसार में सबसे हितैषी, संवेदनशील, सच्चा सहायक, हमदर्द और दुख – सुख का साथी होता है। सच्चे मित्र के संपर्क में आने से व्यक्ति अपने बड़े से बड़े दुख को भूल जाता है। मित्र साहस, उत्साह के लिये प्रेरक का काम करता है। वह शुभचिंतक तथा मुसीबत से बचाने वाला होता है।

भारतीय सम्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

(अमित शाह/गृह मंत्री)





श्रीमती रेशु चौधरी
(आंकड़ा प्रविष्टि संचालक)

लक्ष्य

एक लड़के ने एक बार एक बहुत ही धनवान व्यक्ति को देखकर धनवान बनने का निश्चय किया। वह धन कमाने के लिए कई दिनों तक मेहनत कर धन कमाने के पीछे पड़ा रहा और बहुत सारा पैसा कमा लिया। इसी बीच उसकी मुलाकात एक विद्वान से हो गई। विद्वान के ऐश्वर्य को देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया और अब उसने विद्वान बनने का निश्चय कर लिया और अगले ही दिन से धन कमाने को छोड़कर पढ़ने-लिखने में लग गया।

वह अभी अक्षर ज्ञान ही सिख पाया था, की इसी बीच उसकी मुलाकात एक संगीतज्ञ से हो गई। उसको संगीत में अधिक आकर्षण दिखाई दिया, इसीलिए उसी दिन से उसने पढ़ाई बंद कर दी और संगीत सिखने में लग गया। इसी तरह काफी उम्र बीत गई, न वह धनी हो सका न विद्वान और ना ही एक अच्छा संगीतज्ञ बन पाया। तब उसे बड़ा दुख हुआ। एक दिन उसकी मुलाकात एक बहुत बड़े महात्मा से हुई। उसने महात्मा को अपने दुःख का कारण बताया।

महात्मा ने उसकी परेशानी सुनी और मुस्कुराकर बोले, “बेटा, दुनिया बड़ी ही आकर्षक है, जहाँ जाओगे कोई ना कोई आकर्षण जरूर दिखाई देगा। एक निश्चय कर लो और फिर जीते जी उसी पर अमल करते रहो तो तुम्हें सफलता की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी, नहीं तो दुनियाँ के झमेलों में यूँ ही चक्कर खाते रहोगे। बार-बार रुचि बदलते रहने से कोई भी उन्नति नहीं कर पाओगे।” युवक महात्मा की बात को समझ गया और एक लक्ष्य निश्चित कर उसी का अभ्यास करने लगा।

शिक्षा:—

उपर्युक्त प्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें भी शुरुआत से ही लक्ष्य बनाकर उसी के अनुरूप मेहनत करनी चाहिए। इधर-उधर भटकने की बजाय एक ही जगह, एक ही लक्ष्य पर डटे रहने से ही सफलता व उन्नति प्राप्त की जा सकती है।

सदैव प्रसन्न रहिये
जो प्राप्त है, पर्याप्त है।।





श्री नरेन्द्र लाल
(लिपिक)

संगीत – दिलों का उत्सव

गीतों के 'रंग न हो तो, नीरस हैं, ये जीवन'
सरगम की सुर न छिड़े तो सूना है, मन आंगन
हवाओं में संगीत....हैं।
लहरों में संगीत....हैं।
संगीत बारिश की रिमझिम में,
घड़कन में संगीत है।
सांसों में संगीत है,
संगीत है, कुदरत के कण – कण में,
जब ताल से उठे दिल की तरह कोई
हौले से ख्वाबों को सहला जाता है
गहरे ये रिश्ते हैं, संग रोते हैं हँसते हैं,
सुख – दुख के सब मौसम, गीतों में बसते हैं।
कभी गूँजे बांसुरी, वीणा की धुन कभी,
कभी ढोल, मंजीरे बजते हैं।
तबले की थाप पर, कभी नाचता है मन,
कभी सुर सितार के बहते हैं।
जब ताल से डटे कोई दिल की तरह कोई,
धीमे से यादों को घड़का जाता है कोई
गीत जब साथ – साथ गुनगुनाते हैं,
ये दिल क्योंकि संगीत दिलों का उत्सव है।

भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिंदी महानदी।
(रविन्द्रनाथ ठाकुर)





श्रीमती उर्मिला लिंगवाल
(लेखापरीक्षक)

सफर में हूँ, मुकम्मल सा, कुछ अधूरा सा

सफर में हूँ, मुकम्मल सा, कुछ अधूरा सा
काफी हूँ खुद में मैं, आधा कुछ पूरा सा
नदी के छोर सा हूँ, बादल मुँहजोर सा हूँ
बरसता हूँ कभी बूँदों से भरा, कसोरा सा,
सफर में हूँ, मुकम्मल सा कुछ, अधूरा सा
कुछ खामोश सा हूँ, खुद का दोस्त सा हूँ
बिसरी बातों का मैं एक अफ़सोस सा हूँ
जैसे रातभर जली यादों का बचा चूरा सा
सफर में हूँ मुकम्मल सा कुछ अधूरा सा,
कभी ले आता हूँ रोशनी के पल उधार में,
लूटकर हंसी की घड़ियाँ ग़म के बाज़ार से
उलझी गाँठों, में सुलझे धागों का झोरा सा
सफर में हूँ, मुकम्मल सा कुछ अधूरा सा।

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को सर्वगुं सुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है।

(डॉ राजेंद्र प्रसाद)





श्री प्रवीन कुमार
(लेखापरीक्षक)

॥ हमारी ज़िन्दगी की नाव ॥

एक आदमी ने एक पेंटर को अपने घर बुलाया, और अपनी नाव दिखाकर कहा कि इसको पेंट कर दो। उस पेंटर ने पेंट लेकर उस नाव को लाल रंग से पेंट कर दिया जैसा कि नाव का मालिक चाहता था। फिर पेंटर ने अपने पैसे लिए और चला गया। अगले दिन, पेंटर के घर पर वह नाव का मालिक पहुँच गया, और उसने एक बहुत बड़ी धन राशि का चेक उस पेंटर को दिया। पेंटर भौचक्का हो गया, और पूछा – ये किस बात के इतने पैसे हैं? मेरे पैसे तो आपने कल ही दे दिए थे। मालिक ने कहा – ये पेंट के पैसे नहीं हैं, बल्कि ये उस नाव में जो “छेद” था, उसको रिपेयर करने का पैसा है, पेंटर ने कहा – अरे साहब, वो तो एक छोटा सा छेद था सो मैंने बंद कर दिया था। उस छोटे से छेद के लिए इतना पैसा मुझे, ठीक नहीं लग रहा है।

मालिक न कहा – दोस्त, तुम्हें पूरी बात पता नहीं। अच्छा मैं विस्तार से समझाता हूँ जब मैंने तुम्हें पेंट के लिए कहा तो जल्दबाजी में तुम्हें ये बताना भूल गया कि एक छेद है उसको रिपेयर कर देना और जब पेंट सूख गया, तो मेरे दोनों बच्चे उस नाव को समुद्र में लेकर नौकायन के लिए निकल गए।

मैं उस वक्त घर पर नहीं था, लेकिन जब लौट कर आया और अपनी पत्नी से ये सुना कि बच्चे नाव को लेकर नौकायन पर निकल गए हैं तो मैं बदहवास हो गया। क्योंकि मुझे याद आया कि नाव में तो छेद है। मैं गिरता पड़ता भागा उस तरफ, जिधर मेरे प्यारे बच्चे गए थे। लेकिन थोड़ी दूर पर मुझे मेरे बच्चे दिख गये। जो सकुशल वापस आ रहे थे अब मेरी खुशी और प्रसन्नता का आलम तुम समझ सकते हो।

फिर मैंने छेद चेक किया, तो पता चला के मुझे बिना बताये तुम उसको रिपेयर कर चुके हो..... तो मेरे दोस्त उस महान कार्य के लिए तो ये पैसे भी बहुत थोड़े हैं। मेरी औकात नहीं कि उस कार्य के बदले तुम्हें ठीक-ठाक पैसे दे पाऊँ, जीवन में “भलाई का कार्य” जब मौका लगे हमेशा कर देना चाहिए, भले ही वो बहुत छोटा सा कार्य ही क्यों न हो। क्योंकि कभी – कभी वो छोटा सा कार्य भी किसी के लिए बहुत अमूल्य हो सकता है।

सभी मित्रों को जिन्होंने “हमारी ज़िन्दगी की नाव” कभी भी रिपेयर की है उन्हें हार्दिक धन्यवाद और सदैव प्रयत्नशील रहें कि हम भी किसी की नाव रिपेयरिंग करने के लिए हमेशा तत्पर रहें।





शिवम मिश्रा पुत्र
श्री मधुकर मिश्रा (सहायक पर्यवेक्षक)

हास्य बाल कहानी

एक गाँव में एक आदमी रहता था। एक दिन वह जंगल घूमने गया था, लेकिन उसे वहाँ एक शेर दिखाई दिया। अचानक शेर ने उसे देखा और उस आदमी ने जान बचाने के लिए दौड़ लगाई। उस आदमी का दोस्त एक कछुआ था और वहाँ से गुजर रहा था। उसे उसका दोस्त कछुआ दिखा। उसने कुछ तरकीब सोची और कछुए ने आदमी की जान बचाने के लिए अपने खोल को उतारकर शेर को दे दिया और शेर को चैलेंज दिया। फिर क्या था। शेर ने खोल को तोड़ने के लिए पूरा दम लगाया लेकिन वह उस खोल को तोड़ तो नहीं पाया लेकिन शेर के दाँत व नाखून जरूर टूट गए।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
(महात्मा गाँधी)





श्री योगेश त्यागी
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

आसमान छूती महँगाई

मानव की मूल – भूत आवश्यकताएँ – रोटी, कपड़ा, मकान जो बिना धन के पूरी नहीं हो सकती। इनकी पूर्ति हो जाने के बाद ही मनुष्य भौतिक सुख की कोई वस्तु खरीद सकता है। आज जिस गति से महँगाई बढ़ती चली जा रही है। उससे जो व्यक्ति अपनी मूल – भूत आवश्यकताओं को ही बड़ी कठिनाई से पूरा कर पाते हैं। वर्तमान काल में महँगाई सुरसा के मुख की तरह प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, आज महँगाई और अभाव के दो पाटों के बीच अधिकांश जनता पिस रही है। मध्यम वर्ग के लोग भी इस महँगाई की मार से बहुत परेशान है। महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। इनमें से जनसंख्या वृद्धि प्रमुख कारण है। प्रशासनिक शिथिलता, भ्रष्टाचार, दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, व्यापारी वर्ग द्वारा मुनाफाखोरी एवं जमाखोरी आदि बहुत से और कारण भी हैं जो महँगाई को बढ़ाते हैं। महँगाई को भ्रष्टाचार की जननी भी कहा जा सकता है। मूल्य – वृद्धि होने से भ्रष्टाचार भी बढ़ता है। अतः हमें मूल्य-वृद्धि को रोकने के लिए कोई ठोस कदम उठाने होंगे और इस कमर – तोड़ती महँगाई को काबू में लाना होगा। महँगाई की वजह से देश की अर्थव्यवस्था में भी बहुत उतार – चढ़ाव देखने को मिले। महँगाई ने मनुष्य की जीवन की आजीविका को भी प्रभावित किया है। हमारी जरूरत की सभी वस्तुएँ बहुत महँगी हैं। जल्दी से जल्दी महँगाई की समस्या को दूर करने के लिए सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम उठाये जाने चाहिए, नहीं तो यह महँगाई आम जनता की जेब पर भारी होती जायेगी।

बही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।
(पीर मुहम्मद मूनिस)





श्री महाबीर सिंह
(बहुउद्देशीय कर्मी)

मातृभाषा (हिन्दी)

हम सब भारत के वासिदे, हमारी भाषा हिन्दी है ।
सब भाषा में सबसे, मीठी हमारी भाषा हिन्दी है ।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गुजरात से अरुणाचल तक ।
सबको एक धागे में पिरोये, यही भाषा हिन्दी है ।
यह राज-काज की भाषा है, यह काम-काज की भाषा है ।
यह पत्राचार की भाषा है, यह बोलचाल की भाषा है ।
सुनने में अति मीठी लगती, समझने में अति सरल ये है ।
सबसे अव्वल लिपि हिन्दी की, देखन में ये अति सुंदर है ।
हम सब भारत के वासिदे, हमारी भाषा हिन्दी है ।
सब भाषा में सबसे, मीठी हमारी भाषा हिन्दी है ।
हिन्दी केवल भाषा ही नहीं, पहचान हमारे भारत की ।
सांस्कृतिक विरासत है हिन्दी, है शान हमारे भारत की ।
फिर भी कतिपय क्षेत्रों में, अंग्रेजी अग्रिम भाषा है ।
क्या सभी नहीं ये समझ सके, हिन्दी भारत की भाषा है ।
क्या कारण है कहाँ कमी रही, क्यों नहीं अभी तक फैल सकी ।
ये हिंदुस्तान की भाषा है, हर राज्य में फिर भी जा न सकी ।
हम सब भारत के वासिदे, हमारी भाषा हिन्दी है ।
सब भाषा में सबसे, मीठी हमारी भाषा हिन्दी है ।
आओ मिलकर करें पहल, अब हिन्दी को बढ़ाना है ।
हर काम करेंगे हिन्दी में, हिन्दी में ही बतियाना है ।
अब अंग्रेजी के व्यामोह से, पिंड छुड़ाना आवश्यक है ।
अपने भारत की राजभाषा, हिन्दी अपनाना आवश्यक है ।
हर राज्य के हर दफ्तर में, हिन्दी भाषा में काम करें ।
ऐसा प्रयास करेंगे हम, मिलकर के ये संकल्प करें ।
अब दुनिया के हर कोने में, होगा हिन्दी का गुणगान ।
हर मानव की जिह्वा, बोले हिन्दी – हिन्दी हिंदुस्तान ।
हर मानव की जिह्वा, बोले हिन्दी – हिन्दी हिंदुस्तान ।





श्री संतोष कुमार गुप्ता
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

कवि कवीश (हास्य)

यूँ तो कवि कई प्रकार के होते हैं—छायावादी, यथार्थवादी, नारीवादी, इत्यादि इत्यादि, परंतु मैं वर्तमान में टीआरपी रेटिंग्स को आधार मानते हुए दो प्रकार के ही कवि मानता हूँ—प्रथम वे जिन्हें हम सुनना चाहते हैं, दूसरे वो जो हमें सुनाना ही चाहते हैं। दूसरे प्रकार के कवियों से भारतीय समाज भरा पड़ा है। ‘जहाँ जाइएगा, हमें पाइएगा। अजी हमसे बचके, कहाँ जाइएगा’...की तर्ज पर आप दूसरी श्रेणी वाले कवियों से बच नहीं सकते। सुविधा के लिए इन्हें ‘अति-कवि’ भी कहा जा सकता है।

हास्य—व्यंग्य—कविता का मूल स्रोत हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति, सभ्यता और जीवन दर्शन में देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति में मृत्यु, भय और दुःख का कोई खास वजूद नहीं है। हमारे दार्शनिकों ने जिस ब्रह्म की अवधारणा को समाज के सामने रखा वह सत्चित् के साथ ही आनंद का स्वरूप है। ब्रह्म आनंद के रूप में सभी प्राणियों में निवास करता है। उस आनंद की अनुभूति जीवन का परम लक्ष्य माना जाता है। परन्तु इस दार्शनिक-अवधारणा के समक्ष विकट संकट तब उत्पन्न होता है, जब कवि (या कहिए अति-कवि) अपने आपको कविता की मुख्यधारा से भी अधिक मुख्यता देते हुए अखबारों/पत्रिकाओं में अपनी कविता छापने का दावा प्रस्तुत कर देता है। ‘अहं ब्रह्मास्मि’ की भावना से ओत-प्रोत कवि अपनी कविता प्रकाशित कराने हेतु एक अदद प्रकाशक की तलाश में नख-शिख एक कर देता है। कुछ सामर्थ्यवान कवि प्रकाशकों के पचड़े से बचते हुए स्वयं ही पुस्तक के प्रकाशन का खर्चा वहन करते हैं। प्रकाशन के बाद अपनी पुस्तक जबर्दस्ती दूसरों को पकड़ा कर फोटु खींचा कर फेसबुक पर चेंपते रहते हैं।

खैर, विषयान्तर न करते हुए मुद्दे की बात पर आते हैं। गोरखपुर विश्वविद्यालय के एन सी छात्रावास में रहते हुए कई लेखकों/कवियों की स्मृतियाँ मानस-पटल पर आज भी अंकित हैं। बीएससी के द्वितीय वर्ष के छात्र कवीश जी का हृदय भौतिकी के नियमों और रसायन के सूत्रों के उलझन से दूर कविता के अंकुर विकसित करते हुए स्पंदित हो रहा था। इस नव-प्रस्फुटित अंकुर को वृहद-विस्तार देने के लिए कवीश जी द्वारा बस-अड्डे के पुस्तक-भंडार से ‘मुकेश-रफी के नगमें’ भी क्रय की गई। 10वीं/12वीं के बाद मिलने वाले बैंक, रेलवे, नेवी इत्यादि की सूचनाएँ प्राप्त करने अधिकांश छात्रावासी यहीं पहुँचे रहते थे। इस पुस्तक-भंडार के सामने खड़े हो कर समस्त रोजगार/खाली-पदों की सूचनाएँ हृदयंगम की जाती थीं। जो छात्रावासी अधिक योग्य थे (या स्वयं को मानते थे), उनके लिए लोक सेवा आयोग की परीक्षा से कम की बात करना किसी महापाप से कम नहीं था। आगे का चित्र यह है कि जमींदार परिवार से ताल्लुक रखने वाले कवीश जी का मन रोजगार की सूचनाओं या आयोग की परीक्षाओं में नहीं अपितु कवियों/गीतकारों के पुस्तकों के रंगीन आवरण पर अनायास जा टिकता था। सभी छात्रावासी रोजगार की सूचना प्राप्त करने के उपरान्त बस-अड्डे पर मिलने वाली कुल्हड़-चाय और समोसे का आनन्द उठाते, जिसका व्यय-भार प्रायः कवीश जी ही उठाया करते थे। कवीश जी का यह खर्च निष्फल तो था, परन्तु निष्प्रयोज्य नहीं था। निहित प्रयोजन यही था रात्रि-भोजन के बाद छात्रावास के चबूतरे पर सभी उनकी कविता सुनेंगे। 1996-97 में आज की तरह फेसबुक, ट्विटर, यू-ट्यूब का इन्टरनेट आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म नहीं था, अन्यथा हम लोग चाय-समोसे से वंचित रह जाते।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन के साथ सुनने-सुनाने का कार्यक्रम चलता रहा। एक दिन कवीश जी बहुत गंभीर मुद्रा धारण किए मेरे कमरे में पहुंचे—‘भाई जी, मुझे लगता है किअब मेरी कवितायें अखबार/पत्रिका में छपनी चाहिए। काफी कुछ मेहनत से लिखा है, जो अंश पसन्द आए, उसे आप किसी भी तरह अखबार में छपवाइए। आप सलाह देंगे तो कविता-संग्रह को पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित कराने का विचार है। गन्ने का इस बार का भुगतान चीनी-मिल से आते ही मैं बाऊ जी से बात करूंगा। पुस्तक-प्रकाशन का काम आपको कराना ही होगा...सारा खर्चा मेरा, और आपको पार्टी अलग से ‘ठीक है कवीश जी, आप अपनी टाइप की हुई कविता कल दे दीजिएगा। पूरी कोशिश करूंगा’— मैंने उनकी भावना का सम्मान करते हुए कहा। सकारात्मक उत्तर मिलते ही तुरन्त कवीश जी ने बड़ी स्फूर्ति से अपना झोला खोला और अपनी टाइप की हुई कविता का पुलिंदा और कागज के ठोंगे को पकड़ाते हुए बोले—‘आप आराम से पढ़ लीजियेगा। आधुनिक शैली की मुक्त कविता है’ ठोंगे से आ रही खुशबू से विवश पहले उसे खोला... तो पाया कि चार समोसे और मीठी चटनी का अस्वीकार्य आमंत्रण था। समोसे को उसके उचित जगह पहुंचाने के बाद कवीश जी की कविता पढ़ने (या सहने) लायक ऊर्जा प्राप्त हो चुकी थी। कविता पढ़ने के बाद मुझे जो सदमा लगा कि बयान नहीं कर सकता। ऐसा लगा कि ‘सामान्य वर्तमान काल’ के ‘हिन्दी से अंग्रेजी’ रूपान्तरण के सारे वाक्य बिना तुकबंदी के एक ही जगह समेट दिये गए हैं। डिस्प्रिन की गोली के साथ दो गिलास पानी गले से नीचे एक साँस में उतार गया। उस कविता-संकलन की कुछ पंक्तियाँ साहस जुटा कर उद्धृत कर रहा हूँ, इस प्रत्याशा में कि आपको सर-दर्द नहीं होगा—

किसान खेत में हल चलाता है
 खेत से अन्न निकलता
 यह अन्न भूख मिटाता है
 इस अन्न से देव-भोग भी लगता है
 देवता हर जगह हैं
 देवता ही बारिश कराते हैं
 बारिश से खेत में नमी होती
 नमी से ही फसल उगता है
 अरे वो किसान! वो किसान...

इसी नम मिट्टी में हल चलाता है।... (इसी प्रकार के एक सौ चालीस पन्ने)

इसी घटना के बाद मैंने कवि-कविता दोनों से दूरी...दो गज की नहीं, अपितु सदैव के लिए बना लिया।

भाषा की सरलता, सहजता और
 शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता
 प्रदान करती है। हिंदी ने इन
 पहलुओं को खूबसूरती से
 समाहित किया है।



नरेंद्र मोदी



सुश्री अक्षरमालिका

बच्चों के व्यवहार पर माता-पिता का प्रभाव

इस दुनिया में माता-पिता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। ईश्वर की बनाई सबसे नायाब रचनाओं में से एक, माता-पिता है। उनका प्यार, उनका साथ और उनके दिए जीवन का कर्ज, कोई भी संतान नहीं उतार सकती और इसलिए शायद हर बच्चा अपने माता-पिता के प्रति दिल में असीम प्रेम रखता है। ये प्रेम ही है जो कई बार शब्दों में उतर कर कागज पर आ जाता है। माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार को बहुत प्रभावित करते हैं। माता-पिता और उनके बच्चों के बीच संबंध जितने मजबूत होंगे, बच्चा उतना ही माता-पिता को निराश नहीं करना चाहेगा। बच्चे स्पंज की तरह होते हैं – वे माता-पिता की हर चीज का मॉडल बनाते हैं और जो कुछ वे देखते हैं उसे अपने जीवन में शामिल करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए सही उदाहरण स्थापित करें। नकारात्मक उदाहरण बच्चे के विकास के लिए हानिकारक हो सकते हैं और बुरे व्यवहार को जन्म दे सकते हैं।

सामाजिक कौशल गणना

Abnormal Child Psychology के जर्नल में प्रकाशित शिकागो विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध के अनुसार, असामाजिक बच्चे अपने माता-पिता के उदाहरणों से अपना व्यवहार सीखते हैं। सामाजिक कौशल की व्याख्या बुनियादी विनम्र “कृपया” और “धन्यवाद” से लेकर भीड़ के सामने बोलने तक सब कुछ के रूप में की जा सकती है। बच्चे अपने माता-पिता को मॉडल बनाते हैं और उनसे सीखते हैं।

एक तनावग्रस्त विरासत

तनाव के प्रति माता-पिता की प्रतिक्रिया बच्चे के तनाव पर प्रतिक्रिया करने के तरीके को प्रभावित करती है। यदि माता-पिता नकारात्मक प्रतिक्रिया करते हैं, तो बच्चा भी नकारात्मक प्रतिक्रिया करना सीखेगा। इसके अलावा, तनाव के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ, जैसे चिल्लाना और कोसना, बच्चे को डरा सकता है। बच्चे खुद को बंद रखना सीख सकते हैं और यह भी सोच सकते हैं कि वे तनाव का कारण हैं। यदि तनाव को सकारात्मक रूप से नियंत्रित किया जाता है, तो इससे बच्चों को यह देखने में मदद मिलती है कि तनावग्रस्त होने पर भी उनके माता-पिता का उनके लिए प्यार कभी नहीं बदलता है।

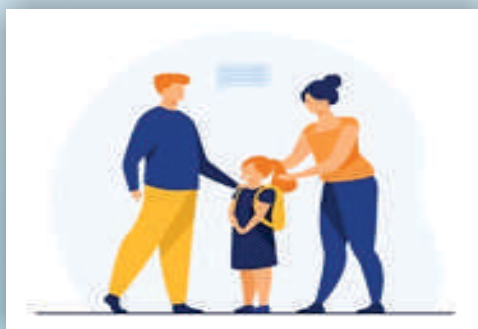
बाल शोषण

बाल शोषण असामाजिक और विनाशकारी व्यवहारों की एक श्रृंखला का कारण बनता है। इसका कारण यह है कि दुर्व्यवहार करने वाले बच्चे सामना करने और यह समझने की कोशिश करते हैं कि उनके साथ दुर्व्यवहार क्यों किया जा रहा है। जो माता-पिता अपने बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, वे अपने बच्चों को आक्रामक और हिंसक बना सकते हैं, और यहां तक कि ड्रग्स या शराब में भी शामिल हो सकते हैं। दुर्व्यवहार करने वाले माता-पिता एक बच्चे को स्वस्थ होने के लिए जो चाहिए, उसके विपरीत प्रदान करते हैं। इसके बजाय, वे एक बच्चे के अंदर और बाहर की दुनिया को नष्ट कर देते हैं।

गरीब मानसिक स्वास्थ्य

हाल के एक अध्ययन ने माता-पिता (या देखभाल करने वालों, जिनकी माता-पिता की भूमिका थी) को अपने बच्चे के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ अपने स्वयं के मानसिक स्वास्थ्य पर रिपोर्ट करने के लिए कहा। 0-17 वर्ष की आयु के 14 बच्चों में से एक के माता-पिता थे, जिन्होंने खराब मानसिक स्वास्थ्य की सूचना दी थी, और उन बच्चों में सामान्य स्वास्थ्य खराब होने, मानसिक, भावनात्मक या विकासात्मक अक्षमता होने, बचपन के प्रतिकूल अनुभव होने की संभावना अधिक थी, जैसे कि जोखिम, तलाक सहित हिंसा या पारिवारिक व्यवधान, और गरीबी में रहना।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।
(मैथिलीशरण गुप्त)





श्री सुबोध नागर
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

चिट्ठियाँ

चिट्ठियाँ खो गई वो...

चिट्ठियाँ...

जिनमें लिखने के सलीके छुपे होते थे
कुशलता की कामना से शुरू होते थे
बड़ों के चरणस्पर्श पर खत्म होते थे।
और बीच में लिखी होती थी जिंदगी...
नन्हें के आने की खबर
माँ की तबीयत का दर्द
और पैसे भेजने का अनुनय
फसलों के खराब होने की वजह।
कितना कुछ सिमट जाता था
एक नीले से कागज में....
जिसे नवयौवना भाग कर सीने से लगाती
और अकेले में आँखों से आँसू बहाती।
माँ की आस थी
पिता का संबल थी
बच्चों का भविष्य थी
और गाँव का गौरव थी ये चिट्ठियाँ।
डाकिया चिट्ठी लाएगा
कोई पढ़ कर सुनाएगा
देख – देख चिट्ठी को
कई – कई बार छू कर चिट्ठी को
अनपढ़ भी
एहसासों को पढ़ लेते थे।
अब तो स्क्रीन पर अंगूठा दौड़ता है
और अक्सर ही दिल तोड़ता है
मोबाइल का स्पेस भर जाए तो
सब कुछ दो मिनट में झिलीट होता है।
सब कुछ सिमट गया छः इंच में
जैसे मकान सिमट गए फ्लैटों में
जज्बात सिमट गए मैसेजों में,
चूल्हे सिमट गए गैसों में,
और इंसान सिमट गए पैसों में।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को
काम में लाना देश की
एकता और उन्नति के
लिए आवश्यक है।



महात्मा गांधी

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।
(महात्मा गाँधी)



श्री अरुण कुमार
(बहुउद्देशीय कर्मी)

काव्य प्रेम

कविताएँ ही आने वाले वक्त में इंकलाब लाएँगी.
कविताएँ ही एक दिन कामयाब होंगी
नफरती आवाजों को दफ़न करने में
आखिर कब तक हम
संवेदनाओं से भरे हृदय को,
नफरतों से भरते रहेंगे
आखिर में कविताएँ
हर हृदय के हिस्से
का प्रेम, उन तक पहुँचाएँगी।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।
—सी. राजगोपालाचारी





श्री दिलीप कुमार
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)

जीवन का टॉनिक, दोस्त...!

मैं अपने विवाह के बाद अपनी पत्नी के साथ शहर में रह रहा था। बहुत साल पहले पिताजी मेरे घर आए थे। मैं उनके साथ सोफे पर बैठा, बर्फ जैसा ठंडा जूस पीते हुए, अपने पिताजी से विवाह के बाद की व्यस्त जिंदगी, जिम्मेदारियों और उम्मीदों के बारे में अपने खयालात का, इज़हार कर रहा था और वे अपने गिलास में पड़े बर्फ के टुकड़ों को, स्ट्रॉ से इधर उधर नचाते हुए, बहुत गंभीर और शालीन खामोशी से, मुझे सुनते जा रहे थे। अचानक उन्होंने कहा – “अपने दोस्तों को कभी मत भूलना। तुम्हारे दोस्त उम्र के ढलने पर, तुम्हारे लिए और भी महत्वपूर्ण और ज़रूरी हो जायेंगे। बेशक अपने बच्चों, बच्चों के बच्चों को भरपूर प्यार देना, मगर अपने पुराने, निःस्वार्थ और सदा साथ निभाने वाले दोस्तों को, हरगिज़ मत भुलाना। वक्त निकाल कर, उनके साथ समय ज़रूर बिताना। उनके घर खाना खाने जाना और जब मौका मिले, उनको अपने घर खाने पर बुलाना। कुछ ना हो सके, तो फोन पर ही जब तब, हालचाल पूछ लिया करना।”

मैं नए नए विवाहित जीवन की खुमारी में था और पिताजी मुझे यारी दोस्ती के फलसफे समझा रहे थे। मैंने सोचा – “क्या जूस में भी नशा होता है, जो पिता जी बिन पिए बहकी बहकी बातें करने लगे? आखिर मैं अब बड़ा हो चुका हूँ, मेरी पत्नी और मेरा होने वाला परिवार, मेरे लिए जीवन का मकसद और सब कुछ है।” दोस्तों का क्या मैं अचार डालूँगा? लेकिन फिर भी मैंने आगे चल कर एक सीमा तक, उनकी बात माननी जारी रखी। मैं अपने गिने चुने दोस्तों के संपर्क में लगातार रहा। समय का पहिया घूमता रहा और मुझे अहसास होने लगा, कि उस दिन पिताजी ‘जूस के नशे’ में नहीं थे, बल्कि उम्र के खरे तजुर्बे मुझे समझा रहे थे। उनको मालूम था, कि उम्र के आखिरी दौर तक, जिन्दगी क्या और कैसे करवट बदलती है? “हकीकत में, जिन्दगी के बड़े से बड़े तूफानों में, दोस्त कभी नाव बन कर, कभी पतवार बन कर, तो कभी मल्लाह बन कर, साथ निभाते हैं और कभी वे आपके साथ ही जिन्दगी की जंग में कूद पड़ते हैं। सच्चे दोस्तों का काम एक ही होता है – दोस्ती निभाना।” जिन्दगी के पचास साल बीत जाने के बाद, मुझे पता चलने लगा, कि घड़ी की सुइयों पूरा चक्कर लगा कर, वहीं पहुँच गयीं हैं, जहाँ से मैंने जिंदगी शुरू की थी। विवाह होने से पहले मेरे पास सिर्फ दोस्त थे। विवाह के बाद बच्चे हुए। बच्चे बड़े हुए। उनकी जिम्मेदारियां निभाते – निभाते मैं बूढ़ा हो चला।

बच्चों के विवाह हो गए और उनके अलग परिवार और घर बन गए। बेटियाँ अपनी जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गयीं। उसके बाद उनकी रुचियाँ, मित्र मंडलियाँ और जिंदगी, अलग पटरी पर चलने लगीं। “अपने घर में, मैं और मेरी पत्नी ही रह गए।” वक्त बीतता रहा। नौकरी का भी अंत आ गया। साथी सहयोगी और प्रतिद्वंदी मुझे बहुत जल्दी भूल गए।

जो मालिक कभी छुट्टी मांगने पर, मेरी मौजूदगी को कम्पनी के लिए जीने मरने का सवाल बताता था, वह मुझे यूँ भूल गया, जैसे मैं कभी वहाँ काम करता ही नहीं था।

एक चीज़ कभी नहीं बदली – मेरे मुट्ठी भर पुराने दोस्त। मेरी दोस्ती न तो कभी बूढ़ी हुई, न ही रिटायर। आज भी जब मैं अपने दोस्तों के साथ होता हूँ, लगता है अभी तो मैं जवान हूँ और मुझे अभी बहुत साल और जिंदा रहना चाहिए।

सच्चे दोस्त जिन्दगी की ज़रूरत हैं, कम ही सही कुछ दोस्तों का साथ, हमेशा रखिये। वे कितने भी अटपटे, गैर- जिम्मेदार, बेहूदे और कम अक्ल क्यों ना हों, जिन्दगी के खराब वक्त में, उनसे बड़ा योद्धा और चिकित्सक, मिलना नामुमकिन है। ‘अच्छा दोस्त दूर हो, चाहे पास हो, आपके दिल में धड़कता है। सच्चे दोस्त उम्र भर साथ रखिये और हर कीमत पर यारियां बचाइये। ये बचत उम्र भर आपके काम आयेगी...!





श्रीमती माया मैठानी
पत्नी श्री प्रवीन कुमार (लेखापरीक्षक)

सकारात्मक सोच

एक घर के पास काफी दिन से एक बड़ी इमारत का काम चल रहा था। वहां रोज मजदूरों के छोटे-छोटे बच्चे एक दूसरे की शर्ट पकड़कर रेल-रेल का खेल खेलते थे। रोज कोई बच्चा इंजन बनता और बाकी बच्चे डिब्बे बनते थे... इंजन और डिब्बे वाले बच्चे रोज बदल जाते, पर ... केवल चड़्डी पहना एक छोटा बच्चा हाथ में रखा कपड़ा घुमाते हुए रोज गार्ड बनता था।

एक दिन मैंने देखा कि... उन बच्चों को खेलते हुए रोज देखने वाले एक व्यक्ति ने कौतुहल से गार्ड बनने वाले बच्चे को पास बुलाकर पूछा...."बच्चे, तुम रोज गार्ड बनते हो। तुम्हें कभी इंजन, कभी डिब्बा बनने की इच्छा नहीं होती?" इस पर वो बच्चा बोला..."बाबूजी, मेरे पास पहनने के लिए कोई शर्ट नहीं है। तो मेरे पीछे वाले बच्चे मुझे कैसे पकड़ेंगे... और मेरे पीछे कौन खड़ा रहेगा....?"

इसीलिए मैं रोज गार्ड बनकर ही खेल में हिस्सा लेता हूँ। "ये बोलते समय मुझे उसकी आँखों में पानी दिखाई दिया। आज वो बच्चा मुझे जीवन का एक बड़ा पाठ पढ़ा गया... अपना जीवन कभी भी परिपूर्ण नहीं होता। उसमें कोई न कोई कमी जरूर रहेगी.... वो बच्चा माँ-बाप से गुस्सा होकर रोते हुए बैठ सकता था। परन्तु ऐसा न करते हुए उसने परिस्थितियों का समाधान ढूँढा।

हम कितना रोते हैं? कभी अपने साँवले रंग के लिए, कभी छोटे कद के लिए, कभी पड़ोसी की बड़ी कार, कभी पड़ोसन के गले का हार, कभी अपने कम मार्क्स, कभी अंग्रेजी, कभी पर्सनालिटी, कभी नौकरी की मार तो कभी धंधे में मार...कभी अपने सिंगिंग की लो-स्किल को लेकर...हमें इससे बाहर आना ही पड़ता है....ये जीवन है... इसे ऐसे ही जीना पड़ता है। चील की ऊँची उड़ान देखकर चिड़िया कभी डिप्रेशन में नहीं आती, वो अपने अस्तित्व में मस्त रहती है, मगर इंसान, इंसान की ऊँची उड़ान देखकर बहुत जल्दी चिंता में आ जाते हैं। तुलना से बचें और खुश रहें।

ना किसी से ईर्ष्या, ना किसी से कोई होड़..! मेरी अपनी हैं मंजिलें, मेरी अपनी ही दौड़..! "परिस्थितियां कभी समस्या नहीं बनती,समस्या इसलिए बनती है, क्योंकि हमें उन परिस्थितियों से लड़ना नहीं आता।"





श्रीमती रुचि रानी,
(बहुउद्देशीय कर्मी)

घर से दूर जब रहने लगे

जब से घर से दूर अकेले रहने लगे है
मुश्किलों को भी हँसकर सहने लगे है
खुद से ही दूँढ लेते हैं अब तो जवाब हम
सवाल भी कुछ अहमियत खोने लगे है
कोई मनाता ही नहीं अब हमे खाने को
न ही आवाज लगाता सुबह जगाने को
खुद से ही खुद को सुला देते है रातों में
खुद से ही खुद को सुबह जगाने लगे है
जब से घर से दूर अकेले रहने लगे है
मुश्किलो को भी हँसकर सहने लगे है
एक मजबूत ताला इंतजार मे रहता है
टकटकी लगाए कब से खामोश बैठा है
दरवाजे ताले की चुगलियाँ करने लगे है
जब से घर से दूर अकेले रहने लगे है
मुश्किलो को भी हंसकर सहने लगे है





मोहित सेठ
(बहुउद्देशीय कर्मी)

अटल कवि

हुयी आंखें ये अश्रुपूर्ण, विचलित हो गया मन सारा
वेदना से भर गया हृदय, शून्य हो गया गगन सारा ।
रत्न भारत के आज देखो, धरती की गोद में सो रहे
ना कोई संवाद, ना है कोई विवाद, जन-जन आज रो रहे ॥
वो अटल दीप थे, उनमें थी कुछ ऐसी ज्वाला
जटिल परिस्थिति मे भी, हर संकट को था टाला ।
अमन, शान्ति और सहानुभूति, थे उनके ये हथियार
जीवन के इस सफर में, देश था उनका एक परिवार ॥
महान थी हस्ती उनकी, धरोहर थे वो भारत के
मृत्यु के उपरांत भी, कर्मों से जीवन्त रहे ।
शत्-शत् नमन है श्रद्धापूर्ण, जो पृथ्वी का था इक सितारा ।
गगन भर गया नयी चमक से, तारों में जो था ध्रुव तारा ।
हुयी आंखें ये अश्रुपूर्ण, विचलित हो गया मन सारा
वेदना से द्रवित हृदय, शून्य हो गया गगन सारा ॥
राजनैतिक उन्मादों में विपक्षी, जिनका आज भी गुण गाते हैं ।
विश्व संसद मे जो हिन्दी का मान बढ़ाते हैं ।
कर परीक्षण पोखरण मे और कारगिल मे विजय की, अपनी पताका फहराते हैं ।
ऐसे अटल शिरोमणि कवि को, हो नतमस्तक; अपनी श्रद्धांजलि देते हैं ।

हिंदी हमारे राष्ट्र की
अभिव्यक्ति का
सरलतम स्रोत है।



सुमित्रानंदन पंत



श्रीमती शोभा सेठ
पत्नी श्री मोहित सेठ (बहुउद्देशीय कर्मी)

मेरी प्यारी हिन्दी

ये हिंदी की बिंदी है बड़ी निराली,
जिसे भारत ने अपने माथे पर है सजाली।
रखना है इसे संभालकर, ये है हमारी धरोहर,
जब तक ये साथ होगी भारतीय साहित्य होगा प्रखर ।।
ये है बड़ी सरल, सुरीली है ये
दिनकर का प्यार, कामायनी जैसी साहित्य का संसार है ये,
भारत के जनमानस का प्रेमरूपी गोदान है ये,
पुष्प की अभिलाषा है, हरिवंश का मधुकलश है ये॥
पर है हिंदी की एक छोटी सी गिला
क्यों इसे वर्ष का सिर्फ एक दिन है मिला ?
क्यों हो गई है ये अपने ही देश में परायी ?
आज भी सम्पूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा न बन पायी ।।
यशस्वी और ओजस्वी है हिंदी,
संस्कृत की लाडली है हिंदी
उर्दू की मौसी कहलाती है हिंदी
बड़ी प्यारी और सहज; हमारी मातृभाषा है हिंदी ।।
बना लो इसे अपने राष्ट्र का सम्मान,
निज भाषा में उन्नत हो पूरा हिंदुस्तान।
आओ हम सब मिलकर इसे जन-जन तक पहुंचाते हैं।
राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा में परिणत कराते हैं ।।





प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), श्री प्रवीन्द्र यादव प्रथम ऑडिट दिवस पर कार्यालय कार्मिकों को संबोधित करते हुए।



हिन्दी कार्यशाला के आयोजन पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रवक्ता डॉ नीरा तिवारी (वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी), एम्स, ऋषिकेश।



विभागीय कैन्टीन के उद्घाटन पर सम्मिलित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



विभागीय कैन्टीन में कम्प्यूटर स्थापित करते कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के अधिकारी एवं कर्मचारी

खेल गतिविधियाँ



चेन्नई में सम्पन्न योनक्स ऑल इंडिया मास्टर्स रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट - 2022 में शामिल कांस्य पदक विजेता श्री अरविंद शर्मा (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)



ओल इंडिया सिविल सर्विसेज टेबल टेनिस प्रतियोगिता - 2021 से 22 में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित श्री गौतम ध्रुव (लेखापरीक्षक) विजेताओं के मध्य।



जनवरी 2022 में नई दिल्ली में सम्पन्न इंडिया ओपन वर्ल्ड बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करते श्री विक्रान्त चावत (सहायक पर्यवेक्षक)।



मार्च 2022 में चंडीगढ़ में सम्पन्न अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती कांस्य पदक विजेता, श्रीमती सक्की शर्मा (वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

भावपूर्ण श्रद्धांजली



श्री अनिल शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भावपूर्ण श्रद्धांजली



श्री रवि शंकर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भावपूर्ण श्रद्धांजली



श्री रोबिन्स कीर्तज
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

उपर्युक्त अधिकारी/कर्मचारी बीते बरस अपनी जीवन – यात्रा पूर्ण करके अखण्ड ज्योति में समा गए। "प्रयास परिवार" की ओर से दिवंगत पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि

सेवानिवृत्ति



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री रविन्द्र भट्ट को विदाई समारोह में सम्मान भेंट करते अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth & Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
कौलागढ़, देहरादून – 248195
उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड के पर्यटक स्थल टिहरी बाँध का अत्यंत सुंदर परिदृश्य।